शिक्षा मंत्रालय
MINISTRY OF
EDUCATION

सपनों की उड़ान

ई-पत्रिका | e-Magazine

Issue 7

August 2025

Traditional Attires of INDIA



Gurmanpreet Kaur
Class–IX
The Mukat Trust International School,
Rajpura, Punjab

Editorial Committee

Chairperson

Jyotsna Tiwari

Head

Department of Education in Arts and Aesthetics, NCERT

Members

M.V. Srinivasan
Head
Publication Division, NCERT

Prachi Pandey
Commissioner
Kendriya Vidyalaya Sangathan (KVS)

Chandana Mandal
Additional Commissioner (Academics)
Kendriya Vidyalaya Sangathan (KVS)

Praggya M. Singh
Director (Academics)
Central Board of Secondary Education (CBSE)

Sameer Pandey
Joint Commissioner (Administration)
Navodaya Vidyalaya Samiti (NVS)

Yuvraj Malik
Director
National Book Trust, India

Call for submissions

We encourage you to share your creative write-ups including articles, poems, stories, travelogues, essays, artworks, illustrations and photographs, etc.

You can share these content in Hindi, English and other Indian laguages.

This is your opportunity to contribute to a platform that celebrates your creativity and expression.

Kindly send your submissions to
e-magazine.moe@ncert.nic.in
We look forward to your submissions.

From the Editor's Desk

I am delighted to present the August issue of *Sapnon ki Udaan* to you. This issue explores many exciting topics, such as the rich history of Indian textiles and the relationship between craftspeople, their culture, identity, and community.

Indian traditional clothing connects us to our cultural roots and communities. It reflects our country's rich heritage and is worn during festivals, religious rituals and special occasions as a mark of respect and devotion.

In this issue, you will find delightful poems, articles, stories and more on the importance of traditional costumes and the history of clothing. Beyond conventional silos, this issue also shows how textiles are becoming an important source of inspiration for modern art and design, showcasing human ingenuity and experience.

A variety of processes go into making textiles and clothing, starting with spinning fibres into yarn, followed by fabric manufacturing, then finishing, dyeing, and washing the garments to add value.

Increased demand for clothing products is further compounding manufacturers' lack of enthusiasm for adopting sustainable and environmentally responsible production practices.

Keep learning, keep creating.

Best Wishes
Jyotsna Tiwari

CONTENTS

4 लेख

समृद्ध भारतीय वस्त्र परंपरा

6 ARTICLE

Exploring Ceremonial and Expressive Attire

8 कविता

झीनी झीनी बीनी चदरिया

9 ARTICLE

Swatantra Bharat to Samriddha Bharat

10 ARTICLE

রসিা সারেমানি

12 ARTICLE

Traditional Wedding Attires of India



14 कविता

वस्त्र– हमारी अनोखी पहचान

15 चर्चा में

'वोकल फॉर लोकल'
आत्मनिर्भर भारत का आधार

16 कहानी

संदूक में छिपा खजाना

18 TEACHER'S CORNER

Threads of the Wind: The Legend of Meera Panda

20 POEM

Attire of a Timeless Land

21 FROM THE PEN OF

ह्वेनसांग

22 ARTICLE

Clothes as Expression: More Than Just Piece of Fabric

23 कविता

संस्कृति के धागे

24 INFOGRAPH

प्राचीन भारतीय परिधानों को दर्शाती मूर्तियाँ

26 विरासत

अहिल्याबाई होल्कर, रुक्मिणी देवी अरुंडेल और
कमलादेवी चट्टोपाध्याय की सांस्कृतिक विरासत

28 INTERVIEW

India's Textile Sector: A Major Source of Employment

32 कहानी

नारायणपुर की गुड़िया

34 लेख

महात्मा गांधी और स्व-निर्भरता

38 यात्रावृतांत

आस्था, संस्कृति और परिधानों का संगम– प्रयागराज महाकुंभ

40 आलेख

परंपरा के रंग, वेश-भूषा के संग



42 ARTICLE

Handlooms of India: A Pillar of Social, Cultural and Economic Identity

44 EVENT

राष्ट्रीय अंतरिक्ष दिवस– 2025
आर्यभट्ट से गगनयान तक

46 TRAVELOGUE

My Memorable Journey to Jagannath Temple, Puri

48 STATE/U.T. TRIVIA

Chandigarh

50 CAREER PAGE

Career in Textile Industry



52 RIDDLES

53 PUZZLES

Word Search

54 COMIC STRIP

विरासत की बुनावट

56 TRAVELOGUE

ਸਫ਼ਰਨਾਮਾ ਰਿਵਾਇਤੀ ਲਿਬਾਸ

58 ARTICLE

Graceful Attires of India

60 POEM

Humming Threads

61 STUMP YOUR FRIENDS

62 CREATIVE CORNER

64 ANSWERS AND CREDITS

समृद्ध भारतीय वस्त्र परंपरा

भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति विश्व की प्राचीनतम एवं महान सभ्यताओं में से एक मानी जाती है। विशाल भू-भाग पर विस्तृत यह देश सदैव विविधता में एकता का प्रतीक रहा है। भारत विश्व की सर्वाधिक समृद्ध कला परंपराओं वाला देश भी है, जिनमें भारतीयों की वेश-भूषा का भी एक विशिष्ट स्थान है। यह परिधान संस्कृति पीढ़ी-दर-पीढ़ी एक नए रूप में समाज के सम्मुख उभरती रही है। भारत का पारंपरिक वस्त्र शिल्प भी उसकी संस्कृति की भाँति अत्यंत प्राचीन है।

प्राचीन संस्कृत ग्रंथों में वस्त्रों के महत्व को इस प्रकार वर्णित किया गया है—

"शीतवातोष्णसंत्राणं लज्जायाः रक्षणं परम्,
देहालंकरणम् वस्त्रमतः शान्तिं प्रयच्छ मे।"

अर्थात् वस्त्र न केवल शीत, वायु एवं ऊष्णता से रक्षा करते हैं, अपितु लज्जा की रक्षा करते हुए शरीर को सुशोभित करता है तथा शांति भी प्रदान करता है।

आदि-कालीन वेश-भूषा

प्रागैतिहासिक युग में मनुष्य अपने शरीर की रक्षा हेतु वृक्षों की छाल, पत्तियाँ और पशुचर्म का उपयोग करता था। वस्त्रों के सबसे प्राचीन साक्ष्य हमें सिंधु-सरस्वती सभ्यता में प्राप्त होते हैं। इसी काल से पारंपरिक भारतीय परिधानों का प्रारंभिक विकास माना जाता है। इस सभ्यता में कपास उत्पादन के प्रमाण भी मिलते हैं। पुरुष धोती और कंधे पर अंगवस्त्र धारण करते थे, जबकि स्त्रियाँ घाघरा तथा अंगरखा जैसा वस्त्र पहनती थीं। विशेष अवसरों पर शिरोवस्त्र और विविध आभूषणों का प्रयोग भी होता था। पुरातात्विक उत्खननों में हमें इस काल की वस्त्र कला के साक्ष्य मिलते हैं।

वैदिक युग के परिधान

वैदिक काल में समाज के विकास के साथ-साथ वेश-भूषा में भी नयापन आया। इस युग में अधिकतर बिना सिले वस्त्रों का प्रयोग होता था। ऋग्वेद में दो प्रमुख परिधानों— 'वास' (निचला वस्त्र) और 'अधिवास' (ऊपरी वस्त्र) का उल्लेख है। उत्तरकालीन ग्रंथों में 'निवी' (अंतःवस्त्र) का भी उल्लेख है। अत्क, बुने हुए और सही नाप के बने हुए परिधान के रूप में वर्णित किया गया है। वस्त्र निर्माण से संबंधित शब्द, जैसे– ओतु (बाना), तंतु (सूत), तंत्र (ताना), वेमन (करघा) और वाय (बुनकर), प्राचीनतान (आगे खिंचा गाया ताना) आदि भी इस काल में प्रचलित थे। 'बरासी' और 'क्षौम' जैसे विशिष्ट वस्त्र वृक्षों की छाल व रेशों से बनाए जाते थे, जो अपनी सूक्ष्म बुनावट एवं सौंदर्य के लिए प्रसिद्ध थे। ऐसा लगता है कि सुंदर परिधान पहनकर सुसज्जित होने की परंपरा प्रचलित थी। इसे सुवास और सुवासना जैसे शब्दों से समझा जा सकता है।

मध्यकालीन भारत

मध्यकाल में वस्त्र निर्माण की अनेक नई शैलियाँ विकसित हुईं। अब वस्त्र केवल मूलभूत आवश्यकता न होकर आकर्षण एवं



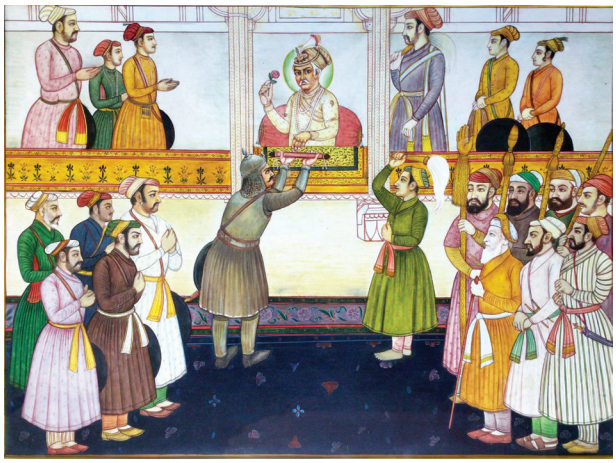
विलासिता का प्रतीक बन चुके थे। पुरुष धोती, अंगरखा, पगड़ी, जामा, चूड़ीदार अचकन आदि पहनते थे, जबकि महिलाएँ साड़ी, चोली, लहँगा और दुपट्टा धारण करती थीं। इन पर सजावट व कढ़ाई की जाती थी।

मध्यकालीन शासकों के दरबारों में जामा, चोगा, दुशाला और पटका लोकप्रिय थे। वहीं मुस्लिम महिलाओं में ढीलजा, गरारा और फर्शी जैसे वस्त्रों का प्रचलन था। हिंदू रानियाँ लहंगा, ओढ़नी और घाघरा धारण करती थीं, जिन्हें रंगीन डोरियों और रत्नों से सजाया जाता था। मराठा स्त्रियाँ नौवारी धोती पहनती थीं और आभूषणों द्वारा स्वयं को सजाती थीं। इस युग में दरबारी संस्कृति का गहरा प्रभाव महिलाओं के वस्त्रों पर भी पड़ा।

आधुनिक काल के वस्त्र

भारत में आधुनिक युग का आरंभ 18 वीं सदी से माना जाता है। अंग्रेजी सत्ता देश में अपनी जड़ें जमाने लगी थी। भारतीय परिधानों पर भी ब्रिटिश प्रभाव पड़ने लगा था। उनकी औपनिवेशिक नीतियों से भारतीय हस्तशिल्प का पतन भी होने लगा था। पश्चिमी शैलियों के मिश्रण की झलक भारतीय पहनावे में देखने को मिलने लगी। भारत में पारंपरिक हस्तशिल्प के पतन और इंग्लैंड की मिलों के बने वस्त्र तीव्र गति से प्रचलित हो रहे थे। शहरों में उच्च वर्ग के लोगों में पारंपरिक पोशाकों के अतिरिक्त गाउन, स्कर्ट, ब्लाउज तथा कोट-पैंट, सूट जैसे पाश्चात्य परिधान भी लोकप्रिय होने लगे थे।

ब्रिटिश उपनिवेशवाद के प्रभाव से भारतीय परिधान और हस्तशिल्प प्रभावित होने लगे, लेकिन स्वतंत्रता संग्राम के दौरान भारतीयता की पुनर्वापसी का मार्ग भी प्रशस्त हुआ। 'स्वदेशी आंदोलन' और महात्मा गांधी ने खादी को बढ़ावा देते हुए देशी वस्त्रों को आत्मनिर्भरता और राष्ट्रीय अस्मिता का प्रतीक बना दिया।



इस आंदोलन ने पारंपरिक वस्त्रों और बुनाई की विधियों को पुनर्जीवित किया, साथ ही खादी भारतीय स्वतंत्रता सेनानियों की पहचान बन गई। इससे बुनकरों और शिल्पकारों को नया सम्मान और सहारा मिला। इस प्रकार, स्वदेशी आंदोलन ने भारतीय परिधान संस्कृति को नई चेतना और गौरव के साथ जनमानस से जोड़ा। हालाँकि वैश्वीकरण के इस दौर में पाश्चात्य परिधान व्यापक रूप से लोकप्रिय हैं और हमारे पहनावे के अभिन्न अंग बन गए हैं। हालाँकि आधुनिक पीढ़ी, विशेष अवसरों पर भारतीय परिधानों को उत्साहपूर्वक अपनाकर न केवल अपनी संस्कृति से जुड़ाव दर्शा रही है, बल्कि स्वयं भी गौरव की अनुभूति कर रही है।

कुमकुम कुमारी
अध्यापक
आर्मी पब्लिक स्कूल, बेंगलुरू, कर्नाटक



ARTICLE

Threads of Tradition: Exploring Ceremonial and Expressive Attire

Indian traditional attire reflects regional identities and cultural subtleties while balancing tradition and modernity. These clothes honour ethnic customs while expressing personal flair, whether they are used for celebrations or everyday wear. Traditional attire is deeply ingrained in India's rich cultural past and represents the significance and legacy of the nation. They are not just clothes. Every piece of clothing, from elegant saries to solemn sherwanis, represents painstaking craftsmanship and timeless traditions. One such attire which epitomises the culture of God's own country is Kerala's divine Set Mundu, which is a two-piece garment that consists of a *mundu* (lower garment) and *neriyathu* (upper garment).

Mundu comes from Malayalam and denotes a simple piece of cloth, conceptually linked to the *antariya*, a lower garment mentioned in Vedic texts that was wrapped around the waist. Neriyatu, on the other hand, evolved from the *uttariya*, an upper garment or shawl worn across the torso and shoulder, often seen in classical sculptures and referenced in Buddhist and Jain literature. Together, the *mundum neriyatum* is the present form of the ancient sari.

History of the Set Mundu

As Kerala formed its unique cultural identity through the Sangam period (3rd century BCE to the 3rd century CE) and into the medieval era, women's attire became closely linked with notions of femininity, modesty, and social structure. The two-piece style—now termed *mundum neriyatum* was adopted predominantly by women of the Nair community, who were then part of the ruling class and adhered to a matrilineal social order.

Mundum neriyatum is the traditional clothing of Nayar women, later adopted by modern Kerala as the Set Mundu.





Cultural Significance

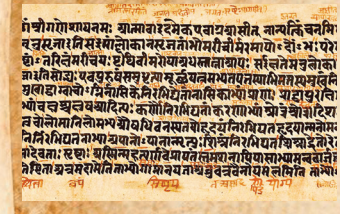
Its roots trace back to the early nineteenth century, when it was favoured by women in Kerala's royal households. Over time, it became a symbol of grace, purity, and tradition, embraced by women across generations.

The Set Mundu is especially prominent during festivals like Onam, weddings, and temple ceremonies. The classic version is off-white or cream with a golden border—called Kasavu—which represents prosperity and simplicity. Though modern variations now include colourful borders and contemporary styling, the essence remains deeply traditional.

Ceremonial and expressive traditional wear like the Set Mundu is far more than an attire—it's a cultural narrative woven in fabric. The Set Mundu of Kerala beautifully embodies this idea, serving as a symbol of identity, elegance, and belonging. Worn during auspicious occasions and festivals, it reflects not only tradition and modesty but also regional pride. Its timeless design and the continued reverence for Kasavu borders echo how clothing can become a living archive of rituals, values, and aesthetic sensibilities. Through the Set Mundu, generations have passed down a legacy—where fabric becomes memory, and style becomes story

Hridya V. Ajit
Class–XII
PM SHRI Kendriya Vidyalaya,
Thiruvananthapuram, Kerala

DID YOU KNOW?



World Sanskrit Day: This day is celebrated on *Shravan Poornima* of Hindu calender every year. This day is dedicated to honouring the ancient Indian language of Sanskrit—one of the oldest and most scientific languages known to humanity. The celebration of this day was initiated by the Government of India in 1969 to revive interest in the language.

कविता

झीनी झीनी बीनी चदरिया

कबीरदास भक्तिकाल के एक प्रमुख संत कवि थे। वे पेशे से बुनकर (जुलाहा) थे। उन्होंने अपनी प्रसिद्ध रचना "झीनी झीनी बीनी चदरिया" में चादर को एक रूपक की तरह प्रयोग करते हुए उसे बुनने की प्रकिया से जीवन के आध्यात्मिक रहस्य को समझाया है।

झीनी झीनी बीनी चदरिया ॥
काहे कै ताना काहे कै भरनी,
कौन तार से बीनी चदरिया ॥

इडा पिङ्गला तानाभरनी,
सुखमन तार से बीनी चदरिया ॥

आठ कँवल दल चरखा डोलै,
पाँच तत्व गुन तीनी चदरिया ॥

साँई को सियत मास दस लागे,
ठोंक-ठोंक कै बीनी चदरिया ॥

सो चादर सुर नर मुनि ओढ़ी,
ओढ़ि कै मैली कीनी चदरिया ॥

दास कबीर जतन करि ओढ़ी,
ज्यों कीं त्यों धर दीनी चदरिया ॥

ARTICLE

Swatantra Bharat to Samriddha Bharat

India's Independence Day is more than just a historic event; it's a day that unites the nation in the celebration of freedom, pride, and patriotism. The Prime Minister Shri Narendra Modi addressed the nation on the 79th Independence Day from the ramparts of the Red Fort, Delhi. He focused on self-reliance, innovation, and citizen empowerment, highlighting India's journey from a nation dependent on others to a globally confident, technologically advanced, and economically resilient country.

Marking his 12th Independence Day address, Prime Minister Shri Narendra Modi turned the Red Fort into a launchpad for the next chapter of India's rise.

Key Points of the Speech

Semiconductors

PM Modi announced that India is now on mission mode. By the end of this year, the nation will roll out its first Made in India chip.

Nuclear Energy

Work is underway on 10 new nuclear reactors as part of India's mission to increase nuclear power generation capacity by over ten times in the next two decades.

GST Reforms

Next-generation GST reforms will be reducing taxes on essential goods and providing relief to MSMEs, local vendors, and consumers.

Reform Task Force for a $10 Trillion Bharat

PM Modi announced the creation of a dedicated Reform Task Force to drive next-generation reforms. Its mandate: accelerate economic growth, cut red tape, modernise governance, and prepare Bharat for the demands of a $10 trillion economy by 2047.

PM Viksit Bharat Rozgar Yojana

To achieve the vision of Viksit Bharat@2047, the Government of India in the Budget 2024–2025 announced the Scheme of 'Employment Linked Incentives'. The scheme focuses on generating employment, enhancing employability and promoting formalisation of the workforce.

Energy Independence

PM Modi pointed out that a large share of India's budget still goes towards importing petrol, diesel, and gas. He announced the launch of the National Deep Water Exploration Mission to tap ocean resources, alongside major expansions in solar, hydrogen, hydro and nuclear power.



ARTICLE

রসা সোরমানি



গোমতী জেলার মেয়ে সুনিধি। সুনিধি পড়ে সপ্তম শ্রেণিতে একটি আবাসিক বিদ্যালয়ে। গরমের ছুটি চলছে তার স্কুলে। তাই সে গরমের ছুটিতে বাড়ি এসেছে। ছোট বেলা থেকেই সুনিধি একটু চঞ্চল স্বভাবের মেয়ে। বাড়িতে আসলেও বাড়িতে তার দেখা মেলা ভার। সে ছুটে চলে যায় তার বন্ধু ডুমরির বাসায়। জামাতিয়া উপজাতীয় মেয়ে ডুমরি থাকে ওদের বাড়ি থেকে কিছুটা দূরে। ডুমরির বাসায় গিয়ে সে দেখল একটা আশ্চর্য ব্যাপার। ডুমরির ঠাকুমা মেঝেতে বসে বসে অভিজ্ঞ এবং ব্যস্ত হাতে একটি কাপড় বুনছে। আর ডুমরি এক মনে সেদিকে চেয়ে দেখছে। তার চাহনিতে একরাশ আগ্রহ। সুনিধি ওর পাশে গিয়ে বসল।

ডুমরি - আরে! সুনিধি !

সুনিধি - কী দেখছ ডুমরি?

ডুমরি - দেখো না আমার ঠাকুমা কী সুন্দর একটি রিসা বুনছেন আমার জন্যে।

সুনিধি - তোমার জন্যে??

ডুমরি - হ্যাঁ, আরে তুমি তো জানোই না—আচ্ছা আগে তুমি বল কতদিন আছো সুনিধি?

সুনিধি - আমার গরমের ছুটি পড়েছে পুরো দুই মাস।

ডুমরি - (হাততালি দিয়ে ওঠে।) তাহলে তো তুমি দেখতেই পাবে। দারুণ একটা ব্যাপার হবে জানো? ঠাম্মি! ও ঠাম্মি! বলো না সুনিধিকে আমাদের বাড়ির অনুষ্ঠানের কথাটা।

ঠাকুমা - আসছে সংক্রান্তির দিনে আমাগো ডুমরির লগে একটা আচার পরব অইব। এরে কয় রিসা সোরমানি। ডুমরি ১৪ বছরে পা দিল তাই আমাগো নিয়মে ও এখন থেকে রিসা পরবে। বড় মহিলারা আমাগো ল্যাম্পা দেবতার কাছে ওর মঙ্গলের জন্যে প্রার্থনা করে প্রথম রিসা ওর হাতে তুলে দেবে। তুমি আইও সুনিধি।

ডুমরি - জানো সুনিধি সেই রিসাই বানাচ্ছেন ঠাম্মি আমার জন্যে। দেখো কী সুন্দর তাই না! সবুজ আর সোনালীতে কী দারুণ রঙ খুলেছে। জানো ঠাম্মি বলেছে আমাকেও শিখে নিতে হবে কেমন করে রিসা হাতে বুনতে হয়। আমি বলেছি আমি আমার ভাইয়ের জন্য একটা রিসা বোনা শিখব। যেটা ও গারিয়া পুজোয় মাথায় বাঁধবে। সুনিধি তোমারও একটা চাই নাকি?

সুনিধি - হুম, অবশ্যই চাই আমারও একটা রিসা তোমার নিজের হাতে বোনা।

ডুমরি - ঠিক আছে । তাহলে আসছে গারিয়া উৎসবের দিন আমি আর তুমি রিগনয়-রিকুতু আর রিসা পরে সাজব কেমন?

সুনিধি এরপর ডুমরির বাসা থেকে নিজের ঘরে ফিরে আসে। রাত্রে বিছানায় শুয়ে সে তার মাকে জানায় ডুমরির বাড়ির ঘটনাটি। জিজ্ঞাসা করে মা? রিসা সোরমানি কী? সুনিধির মা জানায়, বাছা, রিসা সোরমানি হল ত্রিপুরী কিশোরীদের জন্য একটি পালনীয় অনুষ্ঠান। ত্রিপুরী আদি বাসিন্দাদের ঐতিহ্য অনুযায়ী, মেয়েরা একটু বড় হলে বাড়ির বড়রা ওদের এই বস্ত্র পরার অধিকার দেয়। যা দিয়ে ওরা এখন থেকে নিজেদের বক্ষদেশ ঢাকবে। ত্রিপুরী বাসিন্দারা তো তাদের ঘরে ঘরে নিজেরাই বোনে এই বস্ত্র । লয়ান লুমে এই কাপড় তারা বোনে। পুরাকাল থেকে এই প্রথা চলে আসছে। বাড়ির মেয়ে-বৌ-দেরও ওরা এটা বোনা শিখিয়ে দেন। এইভাবে ওরা নিজ সংস্কৃতি আঁকড়ে রেখেছে। তুমি জেনে রাখো মা, মানুষ তার বহু পুরাতন সংস্কৃতি দিয়েই তার মূলের সঙ্গে জুড়ে থাকে। ডুমরির ঠাকুমা এই কাজই করছেন। উনি তার ভবিষ্যত প্রজন্মের মধ্যে তাদের লোক ঐতিহ্যকে প্রবাহিত করিয়ে দিচ্ছেন।



সুনিধি - মা! লয়ান লুম কী মা?

সুনিধির মা - লয়ান লুম, হস্তচালিত বুনন ব্যবস্থা। উত্তর পূর্বের



রাজ্যগুলিতে স্থানীয় বাসিন্দারা দীর্ঘদিন থেকে ব্যবহার করে আসছে। এই প্রথা গরিব আদিবাসীদের স্বনির্ভর বানিয়েছে। এই টেকনিক দিয়ে তারা যেমন নিজেদের কাপড় নিজেরা বুনে নিতে পারে তেমন বিক্রি করে পরিবারে সাহায্যও করতে পারে।

সুনিধি - মা আমাদের উচিত নিজেদের সংস্কৃতিকে তুলে ধরার জন্য রিসা-রিগনয়-রিকুতু ওদের থেকে কেনা। তাহলে ওদের রোজগার হবে। আর ওদের সংস্কৃতিও সংরক্ষিত থাকবে।

সুনিধির মা - হ্যাঁ মা। তুমি একদম ঠিক বুঝেছ।

সুনিধি - জানো মা আমি ডুমরিকে বলে এসেছি আমার জন্য একটি রিসা বুনতে। মা! আমি কি রিসা বুনা শিখতে পারি?

সুনিধির মা - কেন নয় মা?

সুনিধি, নতুন রিসা পরার আনন্দে মায়ের কোলে ঘুমে ঢলে পড়ে।

ভোর হয়। পাখির কিচিরমিচির আর বাবার ডাকে ঘুম ভাঙে সুনিধির।

সুনিধি! চলো। উঠে পড়ো, প্রাতঃভ্রমণে বেরোতে হবে।

সুনিধি ঝটপট তৈরি হয়ে নেয়। সে আর তার বাবা মর্নিং ওয়াকে যায় ডুমরির বাড়ির সামনের পথ ধরেই। ডুমরির ঠাকুমা তখন বুনতে শুরু করেছেন। সুনিধি তার বাবার দৃষ্টি আকর্ষণ করিয়ে বলে বাবা দেখো ডুমরির জন্য ওর ঠাকুমা কী সুন্দর রিসা বানাচ্ছেন। ও রিসা সোরমানি উপলক্ষ্যে এই বস্ত্রটি পরবে। সুনিধির বাবা সুনিধির জ্ঞান বাড়ানোর জন্য জানান বাছা তুমি তো জানো সেভেন সিস্টার্স এর নাম?

সুনিধি - হ্যাঁ বাবা।

সুনিধির বাবা - জানো আমাদের এই ত্রিপুরা যেরকম ভারতের উত্তর পূর্বের একটি ছোট্ট রাজ্য সেই রকম আরও কয়েকটি ছোট্ট ছোট্ট রাজ্য নিয়ে ভারতের সাত বোন রাজ্য গঠিত। ভাই বোনেদের মধ্যে যেমন অনেক মিল থাকে সেইরকম এই সাত বোন রাজ্যও যেন একে অন্যের ছায়া। তুমি জেনে রাখো, এই রাজ্যগুলি তাদের বহু পুরোনো সংস্কৃতিকে এখনও ধরে রেখেছে। আধুনিকতার জোয়ারে নিজেদের সংস্কৃতিকে ভাসিয়ে দেয়নি। এই যে তুমি দেখছ ডুমরির ঠাকুমা পোশাক বানাচ্ছেন নিজের হাতে। এই লয়ান লুম উত্তর পূর্বের একটি পরিচিত বুনন কায়দা। এই যে উনি সুতো দিয়ে কাপড়টি বুনছেন - যার নাম রিসা এই বস্ত্র ত্রিপুরার গৌরব ধারণ করছে।

সুনিধি - বাবা! তাহলে অন্য রাজ্যের মহিলারাও এরকম বস্ত্র বোনেন।

সুনিধির বাবা - হ্যাঁ বাবা সেভেন সিস্টার্স রাজ্যগুলির আদি বাসিন্দা মহিলাদের মধ্যে হাতে বোনা ঐতিহ্যবাহী পোষাক তৈরির চল আছে। কিন্তু এক রাজ্যের সঙ্গে অন্য রাজ্যের পোষাকের একটুও মিল থাকে না। কারণ প্রত্যেকের ইতিহাস আলাদা, সংস্কৃতি আলাদা, পরিবেশ আলাদা। তাই পোষাকের সজ্জাও আলাদা। নামও ভিন্ন ভিন্ন। যেমনঃ মনিপুরীরা লয়ান লুমে বানান 'ফানেক', মিজোরা বানান 'পুয়ান চে', অরুনাচলী মহিলারা পরেন 'গালে', মেঘালয়ে গারো, খাসি উপজাতীয়রা ব্যবহার করেন 'রিণ্ডিয়া', 'ডাকমান্ডা', 'জেন্সেম', অসমিয়া ঐতিহ্যবাহী হাতে বোনা পোষাক 'মেখলা'র নাম তো তুমি শুনেছ। অনেক যত্ন ভালোবাসা দিয়ে তারা এগুলি তৈরি করেন। কারণ এর মাধ্যমে তারা তাদের পরম্পরাকে বাঁচিয়ে রাখেন। উৎসবের পরবের দিনগুলিতে এই পোষাকই তাদের পরিধান।

সুনিধি বাবার কথা শুনতে শুনতে মুগ্ধ হয়ে যায়। তার চোখের সামনে প্রভাতী সূর্যের আলো চারিদিকে লালিমা ছড়ায় আর নতুন কিছু শেখার আনন্দে ঝকঝক করে ওঠে সুনিধিরও চোখমুখ।

Sharmistha Nath
Class–IX
PM SHRI Jawahar Navodaya Vidyalaya,
North Tripura, Tripura

ARTICLE

Traditional Wedding Attires of India

The significance of the bridal dress is one element that unites all Indian wedding customs despite their many variations. The bride's attire reflects the customs and culture of the area in addition to becoming a fashion statement.



For North Indian brides, lehengas are the preferred option, but the Banarasi sari is also highly valued. The Banarasi sari is a sign of royalty and is renowned for its exquisite silk, elaborate zari embroidery, and lavish golden tint.

The sherwani is the groom's preferred piece of clothing. Made of silk or brocade, this long, coat-like garment is adorned with elaborate needlework, frequently using threads of gold or silver. Together with it are a *pagdi*, or turban and *churidar*, or fitted pants.



The clothing is one of the most obvious distinctions between a South Indian wedding and a North Indian one. Whereas South Indian women choose silk or art silk sari in vivid colours like green, yellow, and orange, North Indian brides are dressed in lehengas and sari in shades of pink, maroon, and red.

The traditional dress for South Indian brides is the sari. Marathi weddings are renowned for their simplicity, elegance, and cultural richness, which is beautifully reflected in their traditional attire. The bride typically wears a Paithani sari, a handwoven silk masterpiece from Maharashtra.

The groom usually wears a silk dhoti-kurta or kurta-pyjama paired with a traditional pheta (turban), often in bright saffron or gold. On the other hand, men wear a dhoti, which is a long piece of cloth tied around the waist, with a kurta or shirt. The groom frequently dons a silk dhoti with a golden border and a silk kurta with an elaborate design.





In North India, men's pyjamas like sherwanis and kurtas are popular, However, in South India, men typically wear kurtas and dhotis. With the times, many grooms are now choosing Indo-Western attire, such as a kurta with pants and a jacket.

कविता

वस्त्र– हमारी अनोखी पहचान



रंग-बिरंगे धागों की यह अनोखी कहानी,
हर प्रांत के सुर में गाते रेशों की बानी।
वस्त्रों में झलकती हमारी साझी पहचान,
देश की माटी का गान गाते परिधान।

उत्तर में पगड़ी और धोती का गौरव महान,
पंजाब की फुलकारी छेड़े खुशहाली की तान।
बांग्ला तांत-साड़ी की निराली कोमलता,
कांजीवरम में झलकती चिरकालीन सुंदरता।



गहराई लिए है जामदानी और संबलपुरी की बुनाई,
हाथों की बारीक कला से सजी कच्छ की कढ़ाई।
लखनवी चिकनकारी सँभाले है पीढ़ियों की मेहनत,
जरदोजी दिखाती सुनहरे वस्त्रों की समृद्ध विरासत।

एक और नवप्रभात, नई रश्मियाँ हैं लाई,
पुरातन कलाओं में दिख रही है नई परछाई।
वस्त्र ही नहीं केवल, हैं हमारी अनोखी पहचान,
इनके रेशे-रेशे में झलकता भारत का स्वाभिमान।



कुशाग्र प्रताप सिंह,
कक्षा–10
जी.एन. नेशनल पब्लिक स्कूल, गोरखपुर, उत्तर प्रदेश

‘वोकल फॉर लोकल’ आत्मनिर्भर भारत का आधार



“2047 में विकसित भारत का रास्ता आत्मनिर्भरता से होकर गुजरता है और आत्मनिर्भर भारत का सबसे बड़ा आधार है — वोकल फॉर लोकल”

अगस्त माह भारतीय परिधानों की दृष्टि से विशेष महत्व रखता है। प्रत्येक वर्ष 7 अगस्त को ‘राष्ट्रीय हथकरघा दिवस’ मनाया जाता है। वर्ष 2015 में भारत सरकार ने इस दिवस को आयोजित किए जाने का निर्णय लिया था, जिसके अंतर्गत प्रथम ‘राष्ट्रीय हथकरघा दिवस’ का उद्घाटन 7 अगस्त 2015 को देश के प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने तमिलनाडु की राजधानी चेन्नई में किया था।

उल्लेखनीय है कि भारत की स्वतंत्रता के राष्ट्रीय आंदोलन में 7 अगस्त की तिथि अत्यंत महत्वपूर्ण है। इसी दिन वर्ष 1905 में प्रसिद्ध स्वदेशी आंदोलन का शुभारंभ हुआ था। इस आंदोलन ने स्वतंत्रता आंदोलन में महत्वपूर्ण भूमिका के निर्वहन के साथ ही भारत में स्वदेशी उद्योगों, विशेष रूप से हथकरघा उद्योग को भी प्रोत्साहन दिया था। इसी स्मृति में भारत सरकार ने 7 अगस्त को राष्ट्रीय हथकरघा दिवस घोषित किया।

स्वदेशी आंदोलन के दौरान हथकरघा क्षेत्र को मिले प्रोत्साहन का उल्लेख करते हुए प्रधानमंत्री ने इसे एक क्रांति का प्रारंभ बताया। उन्होंने कहा— *स्वदेशी आंदोलन ने स्थानीय उत्पादों विशेषकर हथकरघा को एक नई ऊर्जा दी। जैसे आजादी की लड़ाई में हमारी खादी ने स्वतंत्रता आंदोलन को नई ताकत दी, वैसे ही आज जब देश एक विकसित भारत बनने की ओर अग्रसर है, तो कपड़ा क्षेत्र देश की ताकत बन रहा है।*

प्रधानमंत्री ने वस्त्र क्षेत्र के महत्व का उल्लेख करते हुए कहा कि *कपड़ा क्षेत्र भारत का सिर्फ एक सेक्टर नहीं है। यह हमारी सांस्कृतिक विविधता की मिसाल है। आज कपड़ा और परिधान बाजार बहुत तेजी से बढ़ रहा है, और इस विकास की सबसे सुंदर बात ये है कि गाँवों की महिलाएँ, शहरों के डिजाइनर, बुजुर्ग बुनकर और हमारे स्टार्टअप शुरू करने वाले युवा, सभी मिलकर इसे आगे बढ़ा रहे हैं।*

प्रधानमंत्री ने विकसित भारत का स्वप्न साकार करने की राह दिखाते हुए कहा कि— *2047 में विकसित भारत का रास्ता आत्मनिर्भरता से होकर गुजरता है और आत्मनिर्भर भारत का सबसे बड़ा आधार है— वोकल फॉर लोकल।* इसके साथ ही प्रधानमंत्री ने देशवासियों से स्वदेशी अपनाने का आह्वान करते हुए कहा— *जो चीजें भारत में बनी हों, जिसे बनाने में किसी भारतीय का पसीना बहा हो, वही खरीदें और वही बेचें। ये हमारा संकल्प होना चाहिए।*

कहानी

संदूक में छिपा खजाना



ये कहानी है उत्तर प्रदेश के जौनपुर जिले के काशीपुर गाँव की। सायंकाल का समय था, सूरज ढल रहा था। लोकगीतों की सुरीली तान के साथ ढोलक की थाप हवा में घुल रही थी। पायल नाम की एक 12 वर्षीय बालिका गर्मियों की छुट्टियों में अपनी दादी के पास आई थी। घर में एक पुराना संदूक रखा था, पायल दादी से अनेक बार उस संदूक के बारे में पूछ चुकी थी। उस शाम दादी माँ ने लकड़ी का वह पुराना संदूक खोला।

पायल कौतूहल के साथ संदूक खुलते हुए देख रही थी। संदूक खुलते ही रंग-बिरंगे कपड़े झाँकने लगे— लाल बंधेज की साड़ी, हरे-सुनहरे धागों वाली बनारसी साड़ी और कुछ ओढ़नियाँ।

पायल की आँखें चमक उठीं, उसने पूछा?

"दादी, ये सब इतने अलग क्यों हैं?

क्या पहले सब लोग ऐसे ही कपड़े पहनते थे?"

दादी ने मुस्कराकर कहा—



"हाँ बिटिया! पहले सब लोग ऐसे ही कपड़े पहनते थे। वास्तव में हर कपड़ा सिर्फ धागों का नहीं होता, उसकी अपनी भी कहानी होती है। सुनोगी?"

पायल उत्सुकता से दादी के पास खिसक आई।

दादी ने कहानी सुनाना आरंभ किया—

"बहुत पुराने समय में, सिंधु घाटी के लोग कपास उगाते थे और उससे वस्त्र बुनते थे। मूर्तियों और मुहरों से पता चलता है कि वे भी साड़ियों और धोती जैसे कपड़े पहनते थे। बाद में वैदिक युग आया, तब लोग बुने और बिना सिले वस्त्र पहनते थे। कपड़े सिर्फ तन ढकने के लिए नहीं थे, पहचान और मर्यादा के भी प्रतीक हैं।"

पायल मंत्रमुग्ध होकर सुनती रही।

"और रंग, दादी?" उसने पूछा।

दादी पायल को गौर से देखते हुए बोलीं—

"भारत रंगों का देश है। यहाँ प्राकृतिक पदार्थों से विभिन्न रंग बनाने की सदियों पुरानी परंपरा, जैसे– हल्दी से पीला, नील से नीला, फूलों से लाल और हरा रंग बनाया जाता था, होली में आज भी टेसू के फूलों से लाल रंग बनता है। रंगों के भी अर्थ थे, जैसे– संन्यासियों के लिए केसरिया या श्वेत, दुल्हन के लिए लाल आदि।"

दादी ने कपड़े समेटते हुए कहा—

"जैसे-जैसे राज्य बने, वैसे-वैसे कपड़े भी विकसित होते गए। नई कलाएँ भी विकसित हुईं बनारस की साड़ी, कश्मीर का पश्मीना, तमिलनाडु की कांजीवरम, असम की मेखला-चादर, ओडिशा की संबलपुरी... हर जगह की अपनी अलग पहचान बनी। राजस्थान की बंधेज और घाघरा-चोली तो तुम्हारे सामने है ही।"

पायल ने ध्यान से बंधेज की ओढ़नी को देखा। अब उसे उसमें रंगों की लहर नहीं, कहानियाँ दिख रही थीं।

दादी ने आगे बताया—

"भारत के इन वस्त्रों की प्रसिद्धि दूर देशों तक थी। रोम, ग्रीस, मिस्र सहित अनेक देशों को अपने भारत से रेशम और सूती कपड़े निर्यात किए जाते थे। सूरत, बनारस, बंगाल और मदुरै वस्त्रों के बड़े केंद्र बने।"

पायल ने धीमे स्वर में पूछा, "फिर क्या हुआ?"

"फिर अंग्रेज आए और उन्होंने अपने व्यापारिक लाभ के लिए नीतियाँ बनाईं, जिससे भारत के हस्तशिल्प का पतन होने लगा।" दादी गंभीर स्वर में बोलीं।

"विदेश में मशीनों से बने वस्त्रों ने हमारे हथकरघों से बने वस्त्रों का स्थान ले लिया, विदेशों को किया जाने वाला निर्यात भी समाप्त हो गया। बुनकर भूखे और बेकार रहने लगे। इससे हमारे पारंपरिक हस्तशिल्प को गहरी चोट लगी। कालांतर में स्वदेशी आंदोलन और गांधीजी ने चरखे द्वारा हस्तशिल्प को फिर से बढ़ावा दिया। इस तरह खादी स्वतंत्रता और आत्मनिर्भरता का प्रतीक बनी।"

मीनू अग्रवाल
कक्षा–10
सनबीम सनसिटी स्कूल एंड हॉस्टल, वाराणसी, उत्तर प्रदेश

धीरे-धीरे रात घिर आई थी और आँगन में चाँदनी फैलने लगी थी। दादी ने पायल को बाँहों में भरते हुए कहा— "आज भी शादी, त्योहार, पूजा व हर विशेष अवसर पर लोग इन कपड़ों को पहनते हैं। अब तो बड़े-बड़े डिजाइनर भी इन्हें नया रूप दे रहे हैं। ये सिर्फ कपड़े नहीं, हमारी जड़ें हैं।"

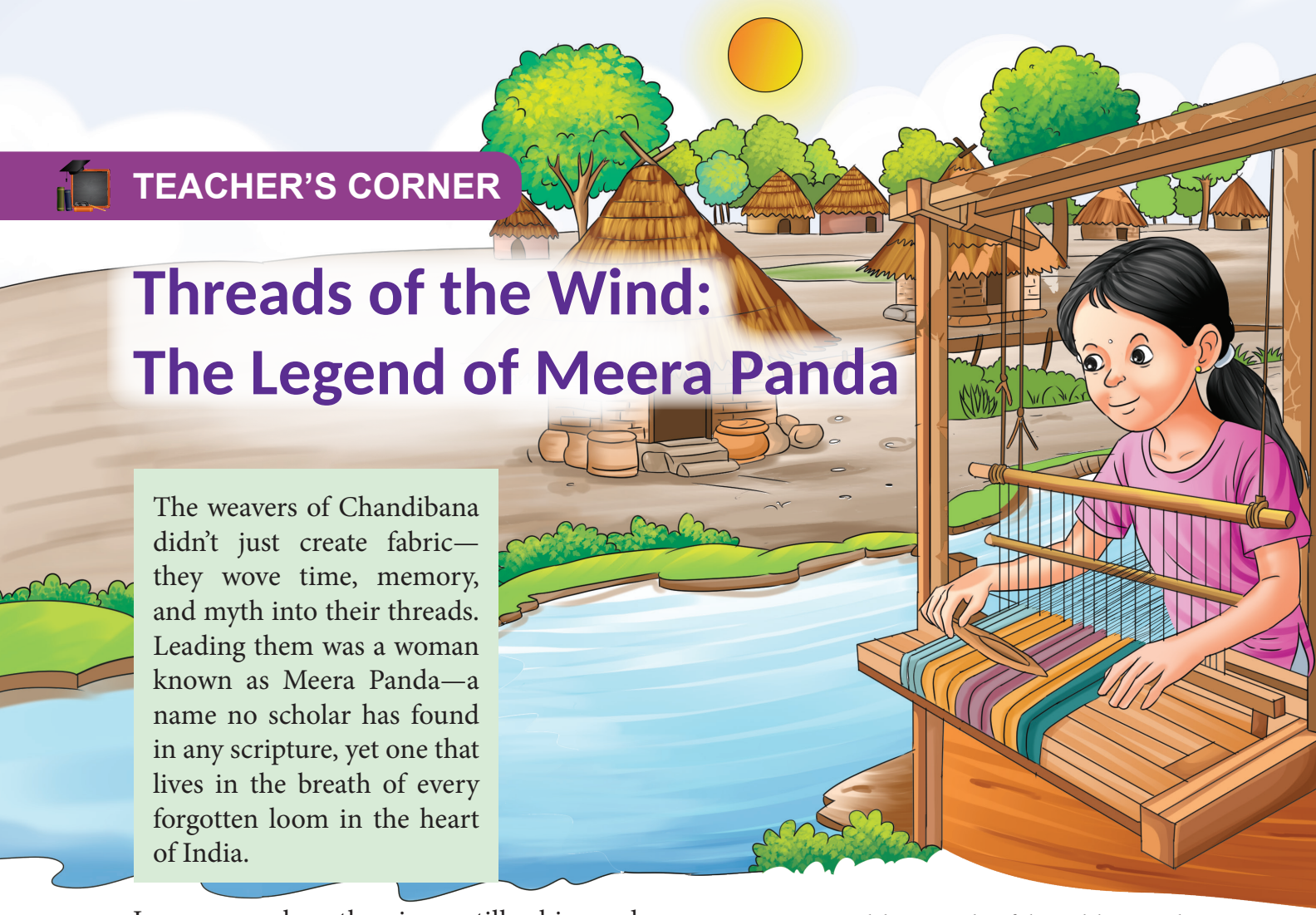
पायल ने बंधेज की ओढ़नी अपने कंधों पर डाली और दर्पण में देखा। उसे लगा जैसे वह किसी बड़ी परंपरा का हिस्सा बन गई हो।

उसने मन ही मन ठान लिया—

"अब मैं इन कपड़ों को सिर्फ पहनूँगी ही नहीं, बल्कि उनकी कहानी भी अपने दोस्तों को सुनाऊँगी।"



Threads of the Wind: The Legend of Meera Panda



The weavers of Chandibana didn't just create fabric—they wove time, memory, and myth into their threads. Leading them was a woman known as Meera Panda—a name no scholar has found in any scripture, yet one that lives in the breath of every forgotten loom in the heart of India.

Long ago, when the rivers still whispered secrets to the winds and trees hummed the ragas of the earth, there lay a hidden hamlet called Chandibana at the confluence of the Satluj and Yamuna rivers.

Meera was said to be born on the loom itself—her first cries timed to the rhythmic clack of her mother's shuttle. From the age of five, she could replicate the ikat of Odisha without ever seeing it, and at 10, she wove patterns whispered by the desert winds of Kutch. What made her truly mystical was her signature weave—a fabric that shimmered like dew yet breathed like cotton, with motifs that changed shape under moonlight.

People said her threads listened. If a grieving woman sat beside her, the motifs would become willows and tear-shaped lotuses. If a warrior returned home, the fabric bloomed with marigolds and fire. When a child was born, the cloth danced with stars.

The Weaver's Secret

The secret, they believed, was in the 'wind silk' spun from the fine threads gathered at dawn from spiderwebs strung between the sal trees, soaked in the morning dew, and blessed by a chant that only Meera knew. She never wrote it down, never spoke it aloud. Only the loom understood her.

For decades, rulers and merchants tried to buy her art. The Nawab of Tonk offered gold bricks equal to her body weight. The British East India Company sent diplomats wrapped in flattery. But Meera never left Chandibana. Her loom was the world, and she wove only for those whose stories touched her soul.



A Stranger in Indigo

One year, in the driest summer the valley had seen, a traveller arrived—cloaked in indigo-dyed wool, though the heat cracked the earth. He carried no bundle, no name, and his face was hidden behind a veil of muslin.

He asked not for food or water. He simply said, "I have a story. Will you weave it?"

Intrigued, Meera invited him to sit. For seven days, he sat in silence, and on the eighth, he whispered just two sentences:

"I once loved a girl who was never born.

But I see her in every sky I pass beneath."

Meera stared into the stranger's eyes—eyes that held monsoons and droughts and the scent of distant ruins. Without another word, she began weaving.

She wove for nine nights, during which no rooster crowed and no dog barked in Chandibana. The village held its breath. Her shuttle moved with fevered grace, and the fabric that emerged seemed to hum with invisible threads of longing.

Aftermath: The Threads Remain

The loom too, never worked again. Weavers tried, but their threads tangled or snapped. The wood moaned as if rejecting their touch. It was eventually placed under a neem tree and garlanded with wildflowers every full moon.

Women who had once watched Meera work began dreaming of her patterns—motifs that had never been seen before. One girl from the nearby village of Nardak began creating weaves of clouds and birds in flight, though she had never learned the craft. An old tribal weaver from Bastar started adding golden dust into his Kosa silk, claiming it came to him in sleep.

The spirit of the vanished weaver had not vanished. It had scattered, like her wind silk, into the hearts of artisans across the land.

The Legacy Unfolds

Today, no one claims ownership of the Vayuvastra weave. But in every corner of India—from the Pashmina of Kashmir to the Jamdani of Bengal, the Kala Cotton of Kutch to the Muga Silk of Assam—weavers speak of dreams, of patterns they see without knowing why.

Some say Meera was never a woman, but the soul of Indian handloom itself—elusive, mystical, and eternal.

And when the wind rushes through a weaver's hut, making the loose threads tremble, the old ones smile and whisper:

She is here.

She never left.

Mamta Shekhar
Principal
PM SHRI Kendriya Vidyalaya No-2, Faridabad, Haryana

POEM

Attire of a Timeless Land

In India's vibrant lands, traditional attire shines bright,
A reflection of culture, history, and heritage in sight.
From north to south, east to west, each religion's unique flair,
A colourful tapestry, woven with love and care.

The sari, a timeless classic, drops with elegance and poise,
In silk and cotton, a symphony of colours, a joyous noise.
The lehanga's flair, the dupatta's flow, a beauty to behold,
A traditional costume, forever to unfold.

From *Banarasi* skills to phulkari's vibrant hue,
Each stitch tells a story, a history anew.
India's traditional costumes, a fusion of past and present too,
Deeply rooted, yet forever relevant and true.

A symbol of heritage, a celebration of pride,
India's traditional clothing forever to abide.
With every thread, a story told,
Of culture, tradition, and history to hold.

Arushi Negi
Class–VIII
Kendriya Vidyalaya, SSB Gwaldam, Uttarakhand

FROM THE PEN OF

ह्वेनसांग

प्रसिद्ध चीनी बौद्ध भिक्षु ह्वेनसांग सातवीं शताब्दी में भारत की यात्रा पर आए थे। उन्होंने अपने यात्रा वृतांत में उस कालखंड के भारत के सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक और सांस्कृतिक जीवन की महत्वपूर्ण जानकारी प्रदान की है। निम्नलिखित उद्धरण में उन्होंने समकालीन भारत के निवासियों की वेश-भूषा और आभूषणों की जानकारी दी है।



केवल उत्तर भारत के ठंडे प्रदेशों में लोग जैकेट पहनते थे। अन्य भागों में सिले हुए कपड़े लोग जानते ही नहीं थे। पुरुष कमर के चारों ओर एक कपड़ा बाँध लेते थे। वह कपड़ा बगलों तक चढ़ा होता था। उनका दायाँ कंधा खुला रहता था। स्त्रियाँ लंबे चोगे पहनती थीं। चोगे उनके दोनों कंधों को पूरी तरह ढके रहते थे। वे नीचे की ओर ढीले-ढाले रहते थे तथा फर्श तक लटकते रहते थे। लोग सफेद वस्त्र अधिक पसंद करते थे। अपने-अपने साधनों के अनुसार लोग रेशमी, ऊनी और सूती कपड़े पहनते थे।

बौद्ध साधुओं के वस्त्र और आभूषण सबसे भिन्न होते थे। अन्य लोग तरह-तरह के अजीबोगरीब वस्त्र पहनते थे। कुछ लोग मोर के पंखों से अपना शरीर ढकते थे। कुछ खोपड़ियों की माला पहनते थे। कुछ नंगे रहते थे तो कुछ अपने शरीर को घास-फूस से ढक लेते थे। किसी के बाल लंबे लटकते थे और मूँछें कटी होती थीं। कुछ लोगों के सिर के दोनों ओर बाल दबे रहते थे और बीच में एक जूड़ी उठी रहती थी। उनके कपड़े भिन्न-भिन्न प्रकार के थे और उनके रंग अलग-अलग थे।

राजसी और कुलीन लोगों के वस्त्र भी जन-साधारण के वस्त्रों से भिन्न प्रकार के होते थे। वे अपने सिरों पर मालाएँ एवं मुकुट पहनते थे। उन मुकुटों में बेशकीमती रत्न जड़े होते थे। गले में हार, बाहों में बाजूबंद और उंगलियों में अंगूठियाँ पहनते थे। राजा और उसके प्रधानमंत्री के वस्त्रों और आभूषणों में फर्क होता था। धनाढ्य व्यापारी सोने की अंगूठी पहनते थे। भारत में लोग बैठने और सोने के लिए आसन या चटाइयों का प्रयोग करते थे।

राज परिवार के सदस्य और कर्मचारी विविध प्रकार की सुसज्जित चटाइयाँ काम में लाते थे। राजा के बैठने के लिए गद्दी बड़ी और ऊँची बनाई जाती थी। उस पर अति सुंदर कपड़ा चढ़ा रहता था। उसके पायों में बेशकीमती रत्न जुड़े रहते थे। प्रतिदिन व्यक्ति अपने बैठने के लिए अपनी इच्छानुकूल सुंदर, चित्रित और बहुमूल्य आसन बनवाते थे।

ARTICLE

Clothes as Expression: More Than Pieces of Fabric

During the pre-and post-independence era, clothes served not only an adornment but also as a subtle sign of resistance against formidable powers. A very prominent example of this would be the Khadi Movement, held in the year 1918. This act of defiance, initiated by Mahatma Gandhi, subtly defied the British rule and aimed to spread the message of independence and self-sufficiency. Gandhi's attire portrayed his refusal to submit to the English while simultaneously reflecting his principles and loyalty to his motherland.

Fashion, is a term used to define a popular style of clothing, footwear and accessories. But, from my perspective, fashion acts not only as a piece of clothing, but also as a medium that grants an individual the liberty of expressing who they are.

Historically, the textile industry of India has been economically and culturally significant. In contemporary times, clothes serve as a means of self-expression. They also reflect the heritage of our society and our society itself. The vast variety of apparel that India has to offer, captivate many, including myself. Every region of India boasts of its own exquisite attire—from the Ghagra Choli of Rajasthan to the Mekhela Chador of Assam, the list continues.



India is a place well known for its diversity and traditional customs, with each state showcasing its own unique culture. Indian weddings are characterised by their atmosphere of opulence, spiritedness and variety.

They are also popular for the attire worn during them. The dress worn by the bride differs from region to region. South Indian bridal attire is known for its silk fabric and gold patterns. In Eastern India, it is traditional for the brides to wear white and red. Central Indian bridal dresses include rich fabrics, and the list goes on.

Clothes are more than just pieces of fabric. They portray a sense of individualism and 'one's true self'. It can also be inferred that the various apparels of India not only showcase its diversity but also uphold its legacy.

Payoja Das
Class–VIII
The Newtown School, Kolkata, West Bengal

कविता

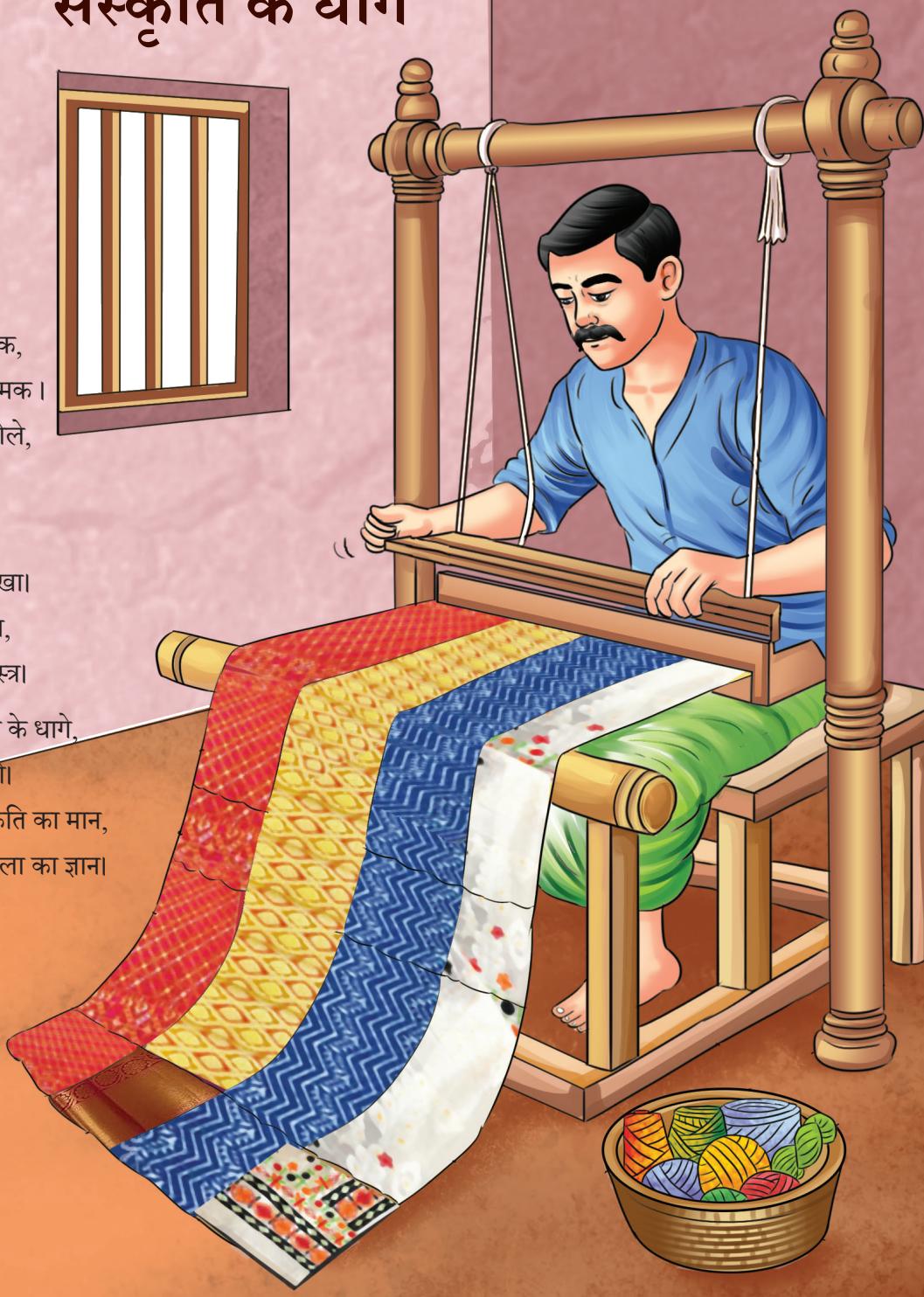
संस्कृति के धागे

धागों में लिपटी संस्कृति पुरानी,
हर रंग कहे एक नवीन कहानी।
करघे पर चलतीं आशीषों की साँसें,
बुनते हैं सपने, उम्मीदों के रेशे।

बनारसी साड़ी में सौंदर्य की चमक,
कांचीपुरम साड़ी में गरिमा की दमक।
फुलकारी की कढ़ाई में पंजाब बोले,
भागलपुरी रेशम में बिहार झूले।

जामदानी, चंदेरी और इकत की रेखा,
कला की इन धाराओं में पूरा भारत देखा।
हर सूत में छुपा है किसी ग्राम का चित्र,
जहाँ बुनकर बुनते हैं भारतीयता के वस्त्र।

एकता के परिधान बुनते संस्कृति के धागे,
इनसे भारतीयता रहती सदा आगे।
पहनकर इनको बढ़ाएँ देश, संस्कृति का मान,
बुनकर हों समृद्ध, रहे संरक्षित कला का ज्ञान।



नंदिनी मंडल
कक्षा–12
पीएम श्री केंद्रीय विद्यालय, चितरंजन, पश्चिम बंगाल

INFOGRAPH

प्राचीन भारतीय परिधानों को दर्शाती मूर्तियाँ



सौंदर्यात्मक मोड़ वाले निचले परिधान धारण की हुई, दीदारगंज (बिहार) से प्राप्त चँवर ग्रहणी यक्षी की मूर्ति। यह मौर्य काल की पोशाक शैलियाँ प्रदर्शित करती है।

मोहनजोदड़ो से प्राप्त, तिपतिया रूपांकन वाले वस्त्र पहने व्यक्ति की मूर्ति। इससे प्रतीत होता है कि सिंधु-सरस्वती सभ्यता के कालखंड में कढ़ाई की गई अथवा बिना कढ़ाई वाली शॉल, बाँए कंधे पर और दाएँ हाथ के नीचे लपेटते हुए ओढ़ी जाती थी।





सिंधु-सरस्वती सभ्यता की मातृदेवी की मूर्ति। यह दर्शाती है कि महिलाएँ घुटने तक की लंबाई वाले निचले वस्त्र पहनती थीं। सिर पर पंखे जैसा आवरण और दोनों ओर प्यालेनुमा उभार इसकी आलंकारिक विशेषता है।

5वीं शताब्दी की बुद्ध की मूर्ति। इसमें महात्मा बुद्ध द्वारा बाएँ हाथ से बाहरी परिधान या संघाती के एक भाग को पकड़े हुए दर्शाया गया है। यह दर्शाता है कि संभवत: लंबे लटकने वाले परिधान उस अवधि में लोकप्रिय थे।



कुषाण वंश के शासक कनिष्क, की प्रथम शताब्दी ईसा पूर्व की धड़रहित प्रतिमा। मथुरा संग्रहालय में रखी इस मूर्ति में देखा जा सकता है कि राजा अँगरखा, लंबा ओवरकोट और जूते पहने हुए हैं।



भारतीय हस्तकला की उत्कृष्ट निधि देखनी हो तो यहाँ जाएँ—

- **राष्ट्रीय हस्तशिल्प एवं हथकरघा संग्रहालय, नई दिल्ली**
  राष्ट्रीय हस्तशिल्प और हथकरघा संग्रहालय नई दिल्ली के प्रगति मैदान में स्थित है। यह संग्रहालय उन सभी शिल्पकारों और कलाकारों को समर्पित है, जिन्होंने अनेक शताब्दियों से भारतीय शिल्पकला की परंपरा को जीवंत रखा है।
- **आशुतोष संग्रहालय, कोलकाता**
  शिक्षाविद आशुतोष मुखर्जी के नाम पर सन 1937 में कोलकाता के विश्वविद्यालय परिसर में स्थापित इस संग्रहालय में पश्चिम बंगाल के विभिन्न शिल्पों के साथ-साथ बांग्लादेश के प्रसिद्ध वस्त्र शिल्पों का भी प्रदर्शन किया गया है।
- **कैलिको वस्त्र संग्रहालय, अहमदाबाद**
  सन 1949 में गीरा साराभाई द्वारा अहमदाबाद, गुजरात स्थापित इस संग्रहालय में देश के विभिन्न भागों से दुर्लभ, ऐतिहासिक और उत्कृष्ट वस्त्रों का संग्रह किया गया है।

अहिल्याबाई होल्कर, रुक्मिणी देवी अरुंडेल और





अहिल्याबाई होल्कर– माहेश्वरी साड़ी

इंदौर के होल्कर वंश की महारानी अहिल्याबाई (1725-1795) भारत के इतिहास में न केवल एक कुशल प्रशासक के रूप में याद की जाती हैं बल्कि, सांस्कृतिक विरासतों के क्षेत्र में भी उनका उल्लेखनीय योगदान है। इनमें से एक विरासत है माहेश्वरी साड़ी। इस साड़ी का नाम मध्य प्रदेश के महेश्वर नगर के नाम पर पड़ा है। अहिल्याबाई ने न केवल महेश्वर को अपनी राजधानी बनाया, बल्कि उसे एक प्रमुख हस्तशिल्प केंद्र के रूप में भी विकसित किया। उन्होंने सूरत और माण्डू से कुशल बुनकरों को आमंत्रित कर महेश्वर में बसाया तथा उन्हें नौ गज लंबी विशेष साड़ी तैयार करने का कार्य सौंपा। कालांतर में यही विशेष साड़ी 'माहेश्वरी साड़ी' के नाम से प्रसिद्ध हुई। प्रारंभ में ये साड़ियाँ शुद्ध रेशम से बनाई जाती थीं, लेकिन अब सूत और रेशम के मिश्रित धागे से बनती हैं। माहेश्वरी साड़ी की एक अन्य विशेषता यह है कि इसकी बुनाई प्रक्रिया में स्थानीय महिलाएँ ही प्रमुख भूमिका निभाती हैं। इस प्रकार पारंपरिक हथकरघा तकनीक से निर्मित यह साड़ी केवल एक परिधान नहीं, बल्कि भारतीय महिला बुनकरों के परिश्रम और स्वावलंबन का जीवंत प्रतीक मानी जाती है।



रुक्मिणी देवी अरुंडेल– कलाक्षेत्र साड़ी

भारतीय हस्तशिल्प परंपरा में तमिलनाडु की पारंपरिक साड़ियों का विशेष स्थान है। ब्रिटिश औपनिवेशिक नीतियों के कारण ये हस्तशिल्प परंपराएँ विलुप्ति की कगार पर पहुँच गई थीं। 20वीं शताब्दी में इस विरासत को आधुनिक पहचान और लोकप्रियता दिलाने का श्रेय भरतनाट्यम की सुप्रसिद्ध नृत्यांगना रुक्मिणी देवी अरुंडेल (1904-1986) को जाता है। रुक्मिणी देवी ने भरतनाट्यम को सम्मानजनक मंच देने, उसे आधुनिक बनाने के साथ-साथ पारंपरिक कोरवाई बुनाई कला को भी पुनर्जीवित किया। इन्हीं उद्देश्यों के लिए उन्होंने 1936 में 'कलाक्षेत्र' संस्था की स्थापना की।



रुक्मिणी देवी ने प्राचीन डिजाइनों का पुनः अन्वेषण किया और उन्हें पुनर्जीवित करने के लिए स्थानीय बुनकरों को प्रेरित किया। इस प्रक्रिया से पारंपरिक दक्षिण भारतीय साड़ियों की एक नई विधा कलाक्षेत्र साड़ी के रुप में लोकप्रिय हो गई। कलाक्षेत्र ने आगे चलकर "अहिंसा रेशम" भी विकसित किया, जिसमें रेशम के कीटों को मारे बिना जंगली पतंगों के छोड़े कोकून से धागा से निकाला जाता है।

कमलादेवी चट्टोपाध्याय की सांस्कृतिक विरासत





कमलादेवी चट्टोपाध्याय– समाज सुधारक, स्वतंत्रता सेनानी और सांस्कृतिक संरक्षक

3 अप्रैल 1903 को मैंगलुरु (कर्नाटक) में जन्मी कमलादेवी चट्टोपाध्याय बाल्यकाल से ही असाधारण जिज्ञासा और विलक्षण प्रतिभा से संपन्न थीं, जिसने उन्हें आगे चलकर भारतीय समाज और संस्कृति को नई दिशा देने वाला व्यक्तित्व बना दिया। वह समय राष्ट्रीय स्वतंत्रता आंदोलन का था, महात्मा गांधी से प्रभावित होकर वे भी इसमें सम्मिलित हो गईं उनका योगदान केवल राजनीतिक आंदोलनों तक सीमित नहीं था। उन्होंने भारतीय कलात्मक विरासतों के संरक्षण के लिए भी अनेक उल्लेखनीय कार्य किए। उन्होंने शिल्पकारों के लिए राष्ट्रीय पुरस्कारों का शुभारंभ किया। वे अखिल भारतीय हस्तशिल्प बोर्ड की प्रथम अध्यक्ष और विश्व शिल्प परिषद् की उपाध्यक्ष भी रहीं। उन्होंने प्रत्येक मंच पर भारत की महान शिल्प परंपराओं की चिंताओं को उठाया। उन्होंने भारत के ग्रामों में कुटीर उद्योगों को प्रोत्साहित किया और परंपरागत कारीगरों को आत्मनिर्भर बनाने के प्रयास किए।

उनके दूरदर्शी प्रयासों और योगदान से देश में अनेक राष्ट्रीय संस्थाओं की स्थापना हुई, जैसे– संगीत नाटक अकादमी, नेशनल स्कूल ऑफ ड्रामा (पूर्व में इंडियन नेशनल थिएटर), सेंट्रल कॉटेज इंडस्ट्रीज एम्पोरियम, क्राफ्ट्स काउंसिल ऑफ इंडिया तथा सांस्कृतिक स्रोत एवं प्रशिक्षण केंद्र (सी.सी.आर.टी) आदि। इन संस्थानों ने न केवल भारतीय कला और शिल्प को संरक्षित किया, बल्कि उन्हें नई पीढ़ी के लिए जीवंत, प्रासंगिक और रोजगारपरक भी बनाया।

कमलादेवी प्रबुद्ध लेखक भी थीं, उन्होंने अनेक प्रसिद्ध पुस्तकों की रचना की– 'द अवेकनिंग ऑफ इंडियन वीमेन', 'जापान— इट्स वीकनेस एंड स्ट्रेंथ' और 'टुवर्ड्स अ नेशनल थिएटर' आदि उल्लेखनीय हैं। वे महिला अधिकारों की भी प्रबल समर्थक थीं और ऑल इंडिया विमेंस कॉन्फ्रेंस की पहली महासचिव रहीं। उनके उत्कृष्ट कार्यों के लिए उन्हें रेमन मैग्सेसे पुरस्कार, यूनेस्को शिल्प प्रोत्साहन पुरस्कार तथा भारत सरकार द्वारा पद्म विभूषण जैसे अनेक सम्मान प्राप्त हुए।। वर्ष 2017 में भारत सरकार ने उनकी स्मृति में महिला बुनकरों और शिल्पियों के लिए राष्ट्रीय पुरस्कार की स्थापना की है। 29 अक्तूबर 1988 को मुंबई में कमलादेवी का देहांत हुआ, किंतु उनका जीवन और कार्य आज भी भारतीय संस्कृति के लिए प्रेरणा– दीपस्तंभ बने हुए हैं।

INTERVIEW

India's Textile Sector: A Major Source of Employment



In this edition of ***Sapnon ki Udaan,*** we had the incredible opportunity to interview **Professor (Dr) Mukesh Kumar Singh** from Uttar Pradesh Textile Technology Institute (Formerly known as Government Central Textile Institute). Dr Mukesh Singh received his PhD from IIT Delhi in 2010. He has written five books in the field of textiles and polymers. He is Fellow Member of Institute of Engineers (IEI), Textile Association of India, Asian Polymer Association, and Society of Microscopy. Here are some inspiring excerpts from our conversation with him.

First of all, what is textile, and how is it related to the fashion industry?

If we look at the basic definition of textiles, we find that various types of textile items are developed by using different woven and non-woven type of fabrics. Textiles have been used to cover the human body. Fashion is essentially a trend adopted by a of society. Fashion we can't limit it only with textile. It can be related to hair, footwear, leather goods, jewellery and many other things. So, fashion is a very broad umbrella, textile form one important part of it.

What are the key facts and figures of textile industry?

If you see the Indian textile industry market in 2024 according to data from the Ministry of textile and Federation of Indian Chambers of Commerce & Industry(FICCI), the indian textile industry was valued at 241 thousand crores of US dollars and it is expected to reach 475 billion US dollars or you can say 475000 crores of US dollar in 2023. So, the total compound annual growth rate which is observed and that will be encountered in the coming decade will remain around 6.84 percent. That is very good because only few sectors are registering more than 10 percent Compound Annual Growth Rate (CAGR) is very close to the average CAGR.

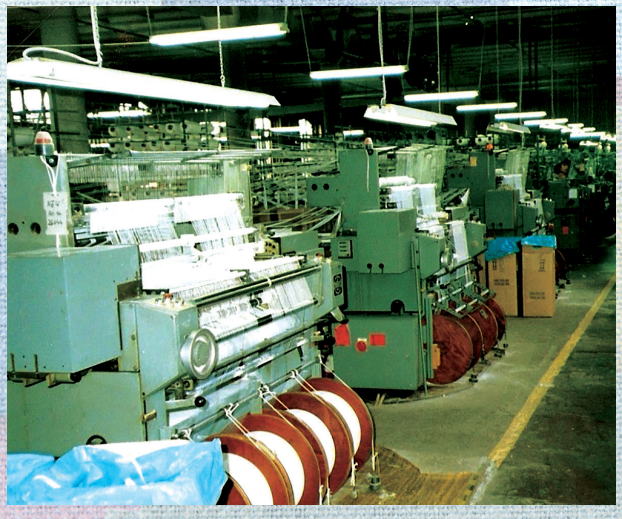
As per the data, Textile is a big industry so what are the career opportunities for the students who are interested in pursuing their career in this sector?

If we look at the under graduate programmes, prefer B.Tech. level, I think almost all major states of our country they have a few colleges offering the B.Tech.

in Textile Engineering and other branches of textile like fashion technology, textile technology, man-made fabric technology, textile chemistry, man-made plant technology. There are nearly 10–12 branches of textile available in the All India Council for Technical Education (AICTE) handbook.

For XII level students, if the student has physics, chemistry, math in XII, one has a very wide scope to get admission into any textile institutes through the Joint Entrance Examination (JEE) Mains. Most engineering colleges across all states honour the JEE mains scorecard. In Uttar Pradesh, There is only one textile institute located in Kanpur, which is 111 year old. This institute was established in 1914 by the British and has also a rich history. Similarly, Haryana also has an old institute. The Technological Institute of Textile and Sciences (TITS) Bhiwani.

NIT Jalandhar also has the Department of Textile Technology at the IIT level, IIT Delhi has a textile department and apart from these, almost every state now has a National Institute of Fashion Technology (NIFT). In UP, NIFT is located at Raebareli These institutes also offer the courses in garment manufacturing technology, fashion technology and related branches



You mentioned about degree courses at graduation level. Are there any diploma courses for X pass students as well?

Yes, nowadays there are many opportunities at high school level also. There are diploma courses for X pass students and there are also open for XII pass students. Different states conduct their own state level entrance examinations. At the diploma level, many courses are available such as Textile Designing, Textile Technology, Textile Chemistry etc.

Many diploma courses are three years long, though some two-year diploma courses are also available especially Textile Printing, Textile Designing. So, all these opportunities are available for our students and the textile industry is the one of the most employment generating industry in India after Agriculture. In last decade, the manufacturing land and construction sectors have grown out, the textile industry remains very close to them in terms of employment generation.

Please tell us something about the admission process, teaching pedagogy and training and placement.

Generally, students should have physics, chemistry and maths at X level, which means the students should come from a science background. However, some courses are also available for the student from arts and commerce streams. If we talk about the teaching methodology, nowadays in most institutes, all classrooms are smart

classrooms. Interactive boards are also available, and whatever is taught in the classroom is also recorded for the students. Most of these lectures are available in our institute website in the form of videos.

You have explained about the theoretical aspect of teaching. What about the practical exposure and industry visit?



Very good question. AICTE has introduced a model curriculum in which every student must complete approximate six months industrial exposure or industrial training before getting B.Tech degree. Providing this training to each student is the core responsibility of the institute and it is compulsory for to gain industry exposure. If we talk about our laboratories, these are well-equipped from the first year itself. Students get first-hand experience on spinning yarn manufacturing, fabric manufacturing, textile processing. Advance analytical equipment such as Differential Scanning Calorimetry (DSC), X-ray Diffraction (XRD), and Scanning Electron Microscopy (SEM) are also available at our institute. So, students get many opportunities for industry visits and internships. This helps in bridging the gap between industry and academia.

There are various schemes launched by the Government of India like MITRA (Mega Investment Textile Park), Production Linked Incentive and Samarth Scheme. What is your opinion on the impact of such schemes?

Both the central and state governments have made serious efforts to make the textile business easier in our country. There are beaver service centres under the Ministry of Textile, which help the small manufactures.

The concept of Textile Mitra Park and different Special Economic Zones (SEZs) is that all raw material should be available within a single area to reduce transportation costs. Suppose, I have a fabric manufacturing industry. So, yarn should be available next to my door at a minimum price so we can reduce the cost of manufacturing fabric. If an industry is employs 50 female workers in UP, that male owner will get 30 to 40 per cent rebate on the electricity bill. Similarly, incentives for employers who promote employment to persons with disabilities, female persons, SC/ST persons get the benefits such as rebates in the electricity bill at the time of registration.

What is the difference between man-made fibres and handmade textiles?

Man-made fibres are synthetic fibres such as polyester, nylon, and spandex, which

are produced industrially from polymers. Handmade textiles refer to fabrics produced on handlooms with intricate designs, often classified as handicrafts, such as Baluchari and Jamdani sari.

What is the difference between textile technology and textile chemistry?

Textile technology involves producing fabric or yarn from fibres, including spinning and weaving. Textile chemistry focuses on processing fabrics through bleaching, dyeing, printing, and finishing using chemical processes.

What is the impact of Artificial Intelligence on the textile sector?

AI supports the textile industry by enabling predictive maintenance, quality control, and process optimization. It helps reduce faults and breakdowns by analysing historical data, thus enhancing product quality and operational efficiency.



How can the Swadeshi concept be promoted in the textile industry?

Indian consumers already consume 95per cent Swadeshi textile products. Promotion involves encouraging consumers to prefer Indian-made products despite slightly higher costs, increasing domestic purchasing power, and government emphasis on supporting local manufacturing.

What job designations and salary ranges can textile graduates expect?

Textile graduates can work as trained engineers, graduate engineers, technical managers in industries like Raymonds, Siyaram, Arvind Mills, and government sectors including defence labs and Ministry of Textiles. Apart from that, almost all banks like State Bank of India(SBI), Punjab National Bank (PNB), all such banks are recruiting the textile graduates for roles like Probationary Officer and technical managers.

Banks need textile exports to evaluate loan proposals for setting up textile industries. These professionals assess the project and recomend whether the loan should be approved. In this way textile graduates get opportunities not only in the industry but also in the banking and financial sectors starting salary are generally around ₹ 5 lakhs per annum, and with the experience they can go to ₹17-20 lakh per annum or even higher.

कहानी

नारायणपुर की गुड़िया

गुड़िया राजस्थान के एक छोटे से गाँव नारायणपुर में रहती थी। उसके पास अपनी माँ से मिली एक पारंपरिक राजस्थानी घाघरा-चोली थी, जो उसे बहुत प्रिय थी। लाल रंग का घाघरा, सुनहरे गोटे और रंग-बिरंगे काँच की कढ़ाई से सजा हुआ, ऐसा लगता था जैसे किसी चित्रकार ने अपनी संपूर्ण कला उस कपड़े में उतार दी हो। इसके साथ सुनहरी कढ़ाई वाली चोली और चमकीली किनारी वाली ओढ़नी बहुत ही सुंदर लगती थी।

गुड़िया की माँ, धापू बाई, एक कुशल कारीगर थीं। गाँव की महिलाएँ प्राय: उनके बनाए घाघरे-चोली आदि शादी-ब्याह के अवसरों पर पहनती थीं। पर गुड़िया के पास जो घाघरा-चोली थी, वह विशेष थी, क्योंकि धापू बाई ने अपने विवाह के समय स्वयँ इसे तैयार किया था। अब वही घाघरा-चोली गुड़िया के पास थे।





एक दिन गाँव में तीज का उत्सव हुआ। ढोल-नगाड़ों की ध्वनि से पूरा गाँव गूँज रहा था। गुड़िया ने पहली बार वह पारंपरिक पहनावा पहना और उत्सव में गई। उत्सव में सबकी दृष्टि उस पर टिक रही थी, लोग कौतूहल और प्रसन्नता से उसे देख रहे थे। गुड़िया भी आत्मविश्वास से दमक रही थी, उसने आज अपना पारंपरिक पहनावा जो पहन रखा था। गुड़िया से इस पहनावे के बारे में पूछा गया तो उसने कहा कि, मेरे लिए घाघरा केवल एक परिधान ही नहीं, बल्कि यह मेरी माँ के परिश्रम, मेरी संस्कृति की पहचान और मेरा आत्मसम्मान है। गाँव के वृद्ध जनों को उसके पहनावे को देखकर अपनी परंपरा जीवित बने रहने की आशा बंध रही थी। उनको लग रहा था कि नई पीढ़ी की यह बालिका जिस उत्साह से अपने पारंपरिक पहनावे को पहन रही, उससे यह परंपरा भविष्य में भी बनी रहेगी।

एक पर्यटक भी उस उत्सव में शामिल हुआ था। उसने गुड़िया की तस्वीर खींची और सोशल मीडिया पर इस शीर्षक के साथ पोस्ट कर दी—"राजस्थान के लोक रंग"। कुछ ही दिनों में तस्वीर वायरल हो गई। बड़ी संख्या में लोग पूछने लगे— "यह पारंपरिक परिधान कहाँ से मिल सकता है?"

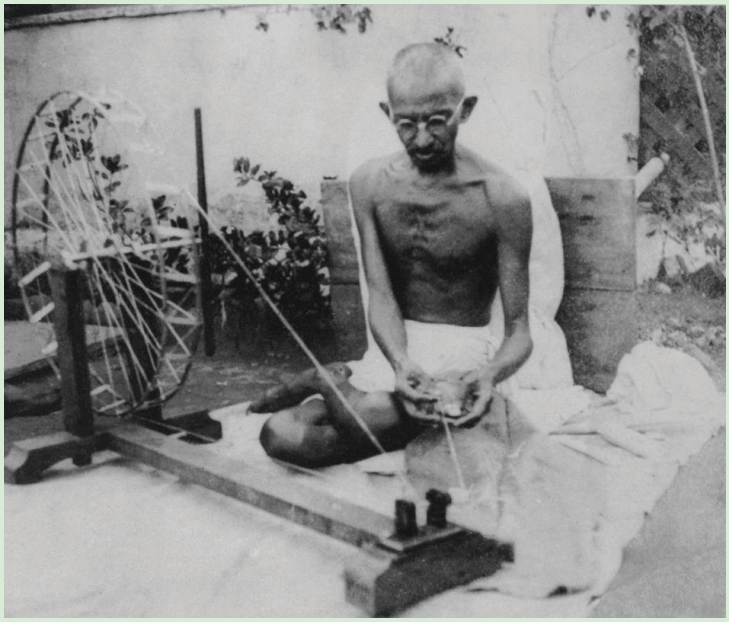
लोगों की इस प्रतिक्रिया से उत्साहित होकर इस धीरे-धीरे गुड़िया और उसकी माँ ने राजस्थानी पारंपरिक वस्त्रों का एक ऑनलाइन स्टोर **"राजस्थान गौरव"** प्रारंभ कर दिया। अब न केवल गाँव, बल्कि शहर और विदेशों तक उनकी कलाकारी और राजस्थानी वस्त्रों की कीर्ति फैल गई थी।

अभिजीत सूत्रधार
कक्षा–10
पीएम श्री जवाहर नवोदय विद्यालय, हरीनगर, असम

महात्मा गांधी और स्व–निर्भरता

"उद्देश्य प्राय: व्यक्ति से बड़ा होता है। निश्चित रूप से चरखा मुझसे बड़ा है। मेरी राय में, इसके साथ भारतीय मानव जाति का जो समग्र हित है, वह भी जुड़ा हुआ है।"

– मोहनदास करमचंद गांधी



गांधीजी के विश्वास की पहली वस्तु अहिंसा है, जैसा उन्होंने स्वयं कहा है। अतः वह ऐसे समाज को स्वीकार नहीं कर सकते, जिसमें हिंसा हो। उन्होंने कहा है कि वास्तव में सच्ची सभ्यता वहाँ है, जहाँ उद्योगों का प्रवेश नहीं हुआ है और उनका प्रभाव नहीं पड़ा है। ब्रिटिश शासन के माध्यम से उद्योगों के प्रभाव का अनुभव करने से पूर्व भारत इस वास्तविक सभ्यता का प्रतिनिधित्व करता था।

स्व-निर्भरता और हस्तशिल्प के संबंध में महात्मा गांधीके विचार प्रत्यक्ष रूप से उद्योगों और औद्योगिक समाज के बारे में उनके विचारों से संबंधित थे। गांधीजी का विश्वास था कि औद्योगिक समाज वस्तुओं के असीमित उत्पादन पर आधारित है। इससे लालच उत्पन्न होता है और प्रतियोगिता बढ़ती है। इसका अंतिम परिणाम हिंसा और युद्ध होता है।

मुझे मशीनरी के लिए आतुरता पर आपत्ति है। यह उस वस्तु के लिए आतुरता है, जिसे वे श्रम बचाने वाली मशीनरी कहते हैं। व्यक्ति श्रम की बचत करता है, जब तक कि हजारों लोग बेरोजगार न हो जाएँ और सड़कों पर भूखे मरने के लिए न आ जाएँ। मैं समय और मेहनत दोनों की बचत करना चाहता हूँ, लेकिन मानव जाति के कुछ हिस्से के लिए नहीं, बल्कि सभी के लिए। मैं चाहता हूँ कि धन का संकेंद्रण केवल कुछ ही लोगों के हाथ में न होकर सभी के हाथ में हो।

– मोहनदास करमचंद गांधी, यंग इंडिया, 13 नवंबर 1924

बीसवीं शताब्दी में भी गांधीजी ने तर्क दिया कि भारत में ऐसे क्षेत्र खोजना संभव है, जो उद्योगों से अछूते हैं। भारत और उसकी सभ्यता का भविष्य उन गाँवों में है, जिन पर परस्पर आदान-प्रदान एवं स्व-निर्भरता के साधारण मानक शासन करते हैं। गांधीजी चाहते थे कि इन गाँवों, इनकी शिल्प अर्थव्यवस्था और उनकी पद्धतियों का पुनरुद्धार हो और ये ऐसी प्रणाली का प्रतिनिधित्व करें, जो उद्योग पर आधारित पश्चिम समाजों से पूर्णत: भिन्न हो। हस्तशिल्प के संबंध में उनके विचार इस दृष्टिकोण का ही भाग थे।

स्वराज का अर्थ

गांधीजी ने अपना यह दृष्टिकोण अनेक लेखों में और उल्लेखनीय रूप से 1909 में हिंद स्वराज में लिखे एक विवेचनात्मक निबंध में व्यक्त किया है, जिसे उन्होंने ब्रिटेन से लौटते हुए जलयान में बैठकर लिखा था। इसमें उन्होंने ऐसे आत्मनिर्भर ग्रामीण गणतंत्र के बारे में लिखा, जहाँ पर ऐसे लोग निवास करते हों, जिनका जीवन स्व-विनियमित हो। गांधीजी के सिद्धांत के अनुसार राष्ट्र के लिए स्वराज का अर्थ मात्र ब्रिटिश शासन से राजनीतिक स्वतंत्रता नहीं है। उनके लिए स्वराज इससे बढ़कर है, जिसमें व्यक्तियों की स्वतंत्रता सम्मिलित है, जिससे कि वे परस्पर

अंग्रेजों द्वारा रचा गया कुचक्र

कर, प्रशुल्क और अन्य प्रतिबंधों के माध्यम से ब्रिटिश सरकार ने भारत में सूती कपड़े के उत्पादन को हतोत्साहित किया और इसके स्थान पर प्रसंस्करण हेतु कच्चा माल इंग्लैंड भेजा। गांधीजी ने इस प्रक्रिया को निम्नवत बताया है—

1. अंग्रेज वैकल्पिक एकाधिकार के माध्यम से भारतीय श्रमिकों से सात सेंट प्रतिदिन के हिसाब से खेत से चुनी गई भारतीय कपास को खरीदते हैं।
2. इस कपास को ब्रिटिश जलयानों में हिंद महासागर, लाल सागर से भूमध्यसागर होते हुए जिब्राल्टर के रास्ते, बिस्के की खाड़ी को पार करते हुए अटलांटिक महासागर से होते हुए तीन सप्ताह की यात्रा कर लंदन ले जाया जाता है। इस मालभाड़े पर सौ प्रतिशत लाभ को भी कम माना जाता है।
3. लंकाशायर में कपास को कपड़े में बदला जाता है, जहाँ श्रमिकों को भारतीय मुद्रा के स्थान पर शिलिंग में पारिश्रमिक दिया जाता है। अंग्रेजी श्रमिक को न केवल अच्छा पारिश्रमिक मिलता है, अपितु इंग्लैंड की स्टील कंपनियों को भी फैक्ट्रियाँ और मशीनें बनाने का लाभ मिलता है। पारिश्रमिक एवं लाभ यह सभी कुछ इंग्लैंड में ही व्यय होता है।
4. अंतिम उत्पाद को यूरोपीय शिपिंग दरों पर एक बार फिर ब्रिटिश जलयानों से भारत भेजा जाता है। इन जलयानों के कैप्टन, अधिकारी और नाविक, जो अंग्रेज हैं, उन्हें पारिश्रमिक अवश्य दिया जाता है। इनमें लाभ पाने वाले भारतीयों में केवल कुछ वे नाविक हैं, जो प्रतिदिन कुछ सेंट के लिए नावों में अस्वच्छ कार्य करते हैं।
5. इन तैयार वस्त्रों को अंततः भारत के राजाओं और जमींदारों को बेचा जाता है। इस मूल्यवान वस्त्रों को खरीदने के लिए धन उन गरीब किसानों से प्राप्त किया जाता है, जो स्वयं सात सेंट प्रतिदिन के लिए काम करते हैं।

– लुई फिशर, 1932, द लाइफ ऑफ महात्मा गांधी

नुकसान पहुँचाए बिना अपने जीवन को विनियमित कर सकें। उनका स्वराज वह था, जिसमें प्रत्येक व्यक्ति स्वयं का शासक हो और उसके पास अपने जीवन को नियंत्रित और विनियमित करने की क्षमता हो। इससे समाज में शक्ति एवं प्रतिष्ठा की असमानता समाप्त हो जाएगी और समुचित रूप से परस्पर आदान-प्रदान होगा। गांधी जी निश्चित तौर पर नहीं चाहते थे कि ब्रिटिश शासन के स्थान पर कोई ऐसा शासन आए, जिसमें शासन और नागरिक समाज की पश्चिमी संस्थाओं को अंग्रेजों के स्थान पर भारतीयों द्वारा चलाया जाए। यह 'अंग्रेजों के बिना अंग्रेजी शासन' जैसा होता। उन्होंने लिखा है कि *यह प्रक्रिया भारत को अंग्रेज बना देगी और जब यह अंग्रेज बन जाएगा, तो हिन्दुस्तान नहीं कहलाएगा, बल्कि इंग्लिस्तान कहलाएगा। यह वह स्वराज नहीं है, जो मैं चाहता हूँ।* गांधीजी के दृष्टिकोण से स्वराज न केवल ब्रिटिश राजनीतिक नियंत्रण के क्षेत्र के बाहर होना चाहिए, अपितु पश्चिमी सभ्यता के प्रभाव से भी परे होना चाहिए।

स्व-निर्भरता के विचार को प्रसारित करना

भारतीयों को सभी ग्रामीण कलाओं और शिल्पों का पुनरुद्धार और संरक्षण करना होगा, तभी यह सब संभव होगा। शिल्प के अंतर्गत गांधीजी ने कताई और बुनाई पर सबसे अधिक बल दिया। उन्होंने लिखा, *वह कौन-सी सेवा है, जिसकी भारत के करोड़ों लोगों को वर्तमान समय में आवश्यकता है, जिसे सभी समझ सकें और उसकी सराहना कर सकें, जो करने में सरल हो और साथ ही साथ हमारे करोड़ों भूख से पीड़ित लोगों को जीवित रख सके? और उत्तर आया कि यह खादी का वैश्वीकरण या चरखा चलाना है, जो इन शर्तों को पूरा कर सकता है।*

कताई, भारतीय हस्तशिल्प का अभिन्न अंग है, जिसे सभी व्यक्तियों के जीवन का अनिवार्य अंग बनाया जाए। इससे जनसाधारण आत्म-निर्भर होगा और जीवित रह सकेगा। यदि भारत के निर्धनों को सुखी एवं संपन्न होना है, तो उन्हें व्यवसाय और आजीविका के सहायक स्रोत की आवश्यकता है। वे केवल कृषि पर ही निर्भर नहीं रह सकते। गांधीजी ने सुझाव दिया कि हाथ से कताई और कुछ हद तक हाथ से बुनाई सहायक स्रोत बन सकता है। उन्होंने टिप्पणी की कि *इस उद्योग ने भारत में डेढ़ सौ वर्ष पूर्व उन्नति की थी और उस समय हम इतने अधिक गरीब नहीं थे, जितने अब हैं।*

इस प्रकार, गाँवों को मिलों और मशीनरी पर कम निर्भर रहना होगा। गांधीजी के लिए यह अत्यंत महत्वपूर्ण था क्योंकि मशीनें औद्योगिक समाज का एक साधन थीं। वे बड़ी मात्रा में उत्पादन करती थीं। अतः खादी के प्रसार से मिलों और मशीनों के प्रभाव तथा इंग्लैंड से भारत में होने वाले कपास के आयात को चुनौती मिलेगी और भारत के लोग स्वयं को हिंसा किए बिना उद्योगों के नकारात्मक प्रभावों और उनसे उत्पन्न होने वाली सम्भावित हिंसा से मुक्त करने में सक्षम होंगे।

1921 में दक्षिण भारत की यात्रा के समय, गांधीजी ने अपना सिर मुंडवा लिया मिल से बने और विदेश से आयात होने वाले कपड़े के स्थान पर खादी की धोती पहननी आरंभ कर दी, ताकि वे गरीबों को साथ लेकर चल सकें। उनकी नई वेश-भूषा संन्यास और त्याग की उन दो विशेषताओं का भी प्रतीक थी, जिनका उन्होंने आधुनिक विश्व की उपभोक्तावादी संस्कृति के विरुद्ध प्रचार किया। गांधीजी ने पश्चिमी वेश-भूषा पहनने वाले राष्ट्रीय नेताओं को भी भारतीय वेश-भूषा पहनने के लिए प्रोत्साहित किया। उन्होंने उन सभी से अनुरोध किया कि वे प्रतिदिन कुछ समय चरखे पर व्यतीत करें। उन्होंने उनसे कहा कि चरखा चलाने से पारंपरिक जाति प्रथा के भीतर मानसिक श्रम और हाथ से किए जाने वाले परिश्रम के मध्य जो सीमाएँ हैं, उन्हें तोड़ने में सहायता मिलेगी।

– यंग इंडिया, 13 नवंबर 1924

गांधीजी साथ-ही-साथ कई अन्य कार्य भी कर रहे थे। वे एक हस्तशिल्प का पुनरुद्धार कर रहे थे, जो कि ग्रामीण जीवन का महत्वपूर्ण घटक था। उनका मत था कि कताई और बुनाई के पुनरुद्धार से लोग उत्तम स्तर का जीवनयापन कर सकेंगे, क्योंकि उनके पास आजीविका का अन्य स्रोत भी होगा। लोग और ग्राम अधिक स्व-निर्भर होंगे। साथ ही, उद्योगवाद के नकारात्मक प्रभावों से लड़ने का जो अधिक महत्वपूर्ण उद्देश्य है, उसकी भी पूर्ति हो जाएगी।

भारत के स्वतंत्र होने से कुछ माह पूर्व गांधीजी ने लिखा था– *चरखा हमारे ध्वज का केंद्र है। यह करोड़ों लोगों की एकता और अहिंसक शक्ति का प्रतीक है। चरखे द्वारा काते गए सूत को मैं एकता के बंधन में बाँधने वाली शक्ति मानता हूँ, जो कि उन सभी को बाँध सकता है, जिन्हें ध्वज के तीन रंग दर्शाते हैं। इसीलिए मैंने कहा है कि स्वराज का पूर्ण सार इस हाथ से बुने हुए सूत के धागे में है और इसलिए मैं चरखे को अपना सबसे शक्तिशाली शस्त्र कहता हूँ।*









स्व-निर्भर ग्राम

गांधीजी के लिए स्व-निर्भरता का विचार सबसे अधिक महत्व का था। एक व्यक्ति, ग्राम और देश तभी स्वतंत्र हो सकता है, जब वह स्व-निर्भर हो। गांधीजी के अनुसार आदर्श भारतीय ग्राम इस प्रकार का था—

प्रत्येक ग्राम का प्रथम ध्येय होगा कि वह अपनी खाद्य फसलें और अपने वस्त्रों के लिए कपास उगाए। इसके पास पशुओं के लिए सुरक्षित भंडार होना चाहिए, वयस्कों और बच्चों के लिए मनोरंजन के साधन और खेल का मैदान होना चाहिए। यदि और अधिक भूमि उपलब्ध हो तो यह उपयोगी नकदी फसलें उगा सकते हैं, जिसमें गाँजा, तंबाकू, अफीम इत्यादि न हो। ग्राम में एक थियेटर, विद्यालय और सार्वजनिक हॉल होगा। इसकी स्वयं की जल-आपूर्ति व्यवस्था होगी, जो स्वच्छ जल आपूर्ति सुनिश्चित करेगी। कुओं अथवा टैंकों के माध्यम से इसे नियंत्रित किया जा सकता है। अंतिम मूलभूत पाठ्यक्रम तक शिक्षा अनिवार्य होगी। जहाँ तक संभव हो, प्रत्येक कार्यकलाप सहकारिता के आधार पर आयोजित किया जाएगा।

गांधीजी ने हस्तशिल्पों, विशेषकर कताई और बुनाई के महत्व पर बल दिया, लेकिन उन्होंने अन्य हस्तशिल्पों का भी उल्लेख किया, जो प्रत्येक ग्रामीण के पैतृक व्यवसाय के भाग थे। उनका मानना था कि हस्तशिल्पों के विकास से व्यक्ति और ग्राम के समग्र संसाधनों में वृद्धि होगी और दोनों स्व-निर्भर और स्व-विनियमित बन जाएँगे। उनके लिए अहिंसा पर आधारित संसार उन्हीं स्थानों पर हो सकता था, जो उद्योगों से अछूते हों। उनके अनुसार भारतीय ग्राम ही ऐसे स्थान थे, क्योंकि उनके समय में, उनका विश्वास था कि वे अभी भी अपेक्षाकृत उद्योगों से अछूते हैं। उनके विचार से ग्रामों के पुनरुद्धार के लिए, उन्हें स्व-निर्भर बनाने के लिए और व्यक्ति को स्वयं का जीवन विनियमित करने का सम्मान प्रदान करने के लिए, हस्तशिल्प उनके कार्यक्रम का अभिन्न और महत्वपूर्ण हिस्सा था। यह गांधीजी के दृष्टिकोण की चुनौती है, जिसे भारत को अभी पूरा करना है।

बीसवीं शताब्दी में महात्मा गांधीएकमात्र व्यक्ति थे, जिन्होंने भारतीय शिल्प को ग्रामीण अर्थव्यवस्था और राजनीतिक स्वतंत्रता की संकल्पना के साथ जोड़कर उस पर पूर्ण ग्रहण लगने से सफलतापूर्वक रोका। उन्होंने लोगों से यह कहा कि वे अपने लिए ऐसा वस्त्र तैयार करें, जो अंग्रेजों द्वारा तैयार न किया जाता हो। उसके लिए घर पर ही सूत कातें। इस तरह उन्होंने साधारण से चरखे को चुनौती का प्रतीक बना दिया और यह आत्मविश्वास और स्वतंत्रता का अहिंसक और सृजनात्मक हथियार बन गया।



आस्था, संस्कृति और परिधानों का संगम
प्रयागराज महाकुंभ

इस वर्ष फरवरी माह में, मैं प्रयागराज में आयोजित महाकुंभ की यात्रा पर गई थी। यह मेरे जीवन का सर्वथा अनन्य अनुभव था। ऐसा अनुभव जिसे मैं कभी नहीं भूल सकती। मैं अपने को सचमुच बहुत सौभाग्यशाली मानती हूँ कि मुझे यह सब अपनी आँखों से देखने और अनुभव करने का अवसर मिला।

हम लोग रेल से प्रयागराज पहुँचे, स्टेशन पर बहुत भीड़-भाड़ थी। भारत के विभिन्न प्रांतों से लोग प्रायागराज आ रहे थे। बहुत से लोग अपने घरों को वापस लौट भी रहे थे। प्रयागराज में विलक्षण वातावरण था। एक विशाल स्थान पर महाकुंभ का मेला सजा था। गंगा, यमुना और अदृश्य सरस्वती नदियों के त्रिवेणी संगम के तट पर दूर तक रेत फैली थी। इसके किनारे स्नान के लिए घाट बने हुए थे। शीतल हवा बह रही थी, जो तन और मन दोनों को शीतल कर रही थी। श्रद्धालु लोगों द्वारा देवों के जयघोष की ध्वनि, मंदिरों और मठों से आने वाली शंख-घंटे की ध्वनि और वेद ऋचाओं के पाठ का स्वर एक आध्यात्मिक वातावरण रच रहे थे।

संगम की ओर बढ़ते हुए मैंने देखा कि बालक, वृद्ध और युवा सबने विविध प्रकार की वेश-भूषाएँ पहन रखी थीं। यह कोई सामान्य जनसमूह नहीं था, ऐसा प्रतीत हो रहा था मानो एक लघु भारत यहाँ एकत्र हो गया हो। यहाँ बड़ी संख्या में पारंपरिक परिधानों में आए लोग थे, जो अपने-अपने परिधानों से अपनी परंपरा और संस्कृति को प्रदर्शित कर रहे थे।

मार्ग में साधु-संतों की पेशवाईयाँ दिखीं। गेरुएँ वस्त्र धारण किए, भस्म रमाए संतों को देखना एक अनोखा अनुभव था। सामान्य श्रद्धालुओं के परिधानों की बात ही निराली थी। अनेक महिलाएँ रंग-बिरंगे दुपट्टे ओढ़े हुए थीं, जिनमें पीला, गुलाबी, नीला रंग था। वे संगम से आती तेज हवा में इस प्रकार लहरा रहे थे मानो रंग बिरंगी तितलियाँ एक साथ उड़ रही हों।

अनेक लोगों ने कुर्ता-पायजामा पहना था तो अनेक वृद्धजन धोती-कुर्ता और पगड़ी पहने हुए थे। पंजाब से आए लोग विविध रंगों की पगड़ियाँ पहने हुए थे तो दक्षिण भारत से आए लोग अपनी विशिष्ट लुंगी और महिलाएँ नीली, लाल, नारंगी साड़ियों में थीं। मुझे लगा कि प्रत्येक प्रान्त अपने रंग में रंगा था। वहाँ मैंने यह भी देखा कि केवल वस्त्र ही नहीं, अपितु उनको पहनने का ढंग भी अलग-अलग था, जैसे– उत्तर भारत में साड़ी पहने महिलाएँ सिर पर पल्लू डाले हुए थीं। महाराष्ट्र की

महिलाओं ने नौवारी साड़ी को धोती की तरह पहना था। इसी प्रकार तमिलनाडु व कर्नाटक प्रदेशों की महिलाओं ने विशिष्ट शैली में कांजीवरम या मैसूरी सिल्क साड़ियाँ पहनी थीं। इसी तरह कुछ लोगों के कुर्ते-पायजामे सफेद, लंबे और सपाट थे तो अनेक लोगों ने कढ़ाई किए हुए रंग-बिरंगे कुर्ते पहने थे। बहुत से छोटे बच्चों ने भी अपने पारंपरिक वस्त्र पहने थे, जो उन्हें और भी सुंदर बना रहे थे।

मेले में बहुत से बाजार थे, जहाँ विभिन्न प्रदेशों से आए व्यापारी अपने-अपने पारंपरिक और हस्तशिल्प परिधान, खिलौने आदि बेच रहे थे। इसी तरह अनेक की प्रकार मालाएँ, जैसे– रुद्राक्ष, तुलसी और स्फटिक आदि बेचीं जा रहीं थीं। फेरी वाले रंगीन लाख और काँच की चूड़ियाँ एवं कंगन बेच रहे थे। भारत की विविधता लिए पकवानों और भोजन की अनगिनत दुकानें और स्टॉल लगे थे। इस तरह यह केवल धार्मिक मेला न होकर भारतीय संस्कृति एवं शिल्प का एक भव्य प्रदर्शनी-स्थल भी लग रहा था।

प्रयागराज से लौटते समय मैं सोच रही थी कि हम भारतीय अपनी परंपराओं को आज भी कितनी निष्ठा से सुरक्षित रखे हुए हैं। ये वस्त्र, ये परिधान, केवल फैशन नहीं हैं, बल्कि यह हमारी संस्कृति के जीवंत प्रतीक हैं। ये हमें हमारी जड़ों से जोड़े



रखते हैं और स्मरण कराते हैं कि हम कौन हैं। आधुनिकता की दौड़ में भी लोग अपनी परंपराओं को विस्मृत नहीं कर रहे, बल्कि स्वाभिमान से उनको संजोकर रखे हैं।

महाकुंभ और वहाँ विभिन्न प्रकार के परिधानों को देखना मेरे लिए केवल तीर्थ यात्रा न होकर, अपने प्रिय भारत देश को समीप से जानने का एक दुर्लभ अवसर था। यह अनुभव सदा मेरे साथ रहेगा, और जब भी मैं इस पवित्र स्थल को स्मरण करती हूँ, तो मेरी आँखों के सामने वे असंख्य लोग उपस्थित हो जाते हैं, जो अपनी आस्था और अपने परिधान के साथ एकरूप हो गए थे।

गुनगुन सिंह
कक्षा–10
राजकीय आदर्श वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, चंडीगढ़



परंपरा के रंग, वेश-भूषा के संग



मैं हूँ शताक्षी जोशी, कक्षा पाँच की छात्रा। मुझे पढ़ना-लिखना, नृत्य के साथ-साथ भारतीय पारंपरिक कपड़े पहनना बहुत अच्छा लगता है। जब भी हमारे विद्यालय में कोई उत्सव, दिवस या विशेष प्रस्तुति होती है, मैं पूरे उत्साह से एक नई भारतीय वेश-भूषा पहनकर उसमें भाग लेती हूँ। इससे मुझे न सिर्फ अच्छा लगता है, बल्कि मैं बहुत कुछ नया भी सीखती हूँ, जैसे कि उस राज्य की बोली, लोककलाएँ और रीति-रिवाज आदि।

मेरी माँ कहती हैं कि भारत एक रंग-बिरंगी चादर है, जिसमें हर राज्य एक सुंदर कढ़ाई जैसा है। और मुझे लगता है कि उन कढ़ाइयों को जोड़ने का सबसे सुंदर तरीका है— वेश-भूषा, यानी हम जो पहनते हैं।

भारत एक बहुत सुंदर देश है, जहाँ अलग-अलग धर्म, संस्कृति और भाषा वाले लोग मिल-जुलकर रहते हैं। मुझे हमारे देश की पारंपरिक वेश-भूषा बहुत अच्छी लगती है।

भारत के विभिन्न भागों में अनेकों प्रकार के परिधान पहने जाते हैं, जो वहाँ की जलवायु, रीति-रिवाज और रहन-सहन के अनुसार होते हैं।

मैं जब भी अपनी माँ और दादी से पुराने समय की बातें सुनती हूँ, तो सबसे अधिक मुझे कपड़ों की बातें रोमांचित करती हैं। दादी बताती हैं कि उत्तर भारत में महिलाएँ सुंदर-सुंदर साड़ियाँ पहनती थीं, जैसे– बनारसी, माहेश्वरी और चंदेरी आदि। मेरी माँ के पास उनके विवाह की लाल रंग की बनारसी साड़ी है, जिसे वे विशेष अवसरों पर प्राय: पहनती हैं। घर में जब भी त्योहार होता है तो पिताजी



कुर्ता-पायजामा पहनते हैं और माँ साड़ी पहनती हैं। दादी हमेशा कहती हैं, “जो परंपरा को पहचानेगा, वही सच्चा भारतीय कहलाएगा।”

मैंने अब तक कई बार अलग-अलग राज्यों की पारंपरिक वेश-भूषा पहनी है। एक बार मैंने असम की मेखला-चादर पहनी, तो दूसरी बार घाघरा-चोली पहनकर ‘गरबा’ किया। एक बार हमारे विद्यालय में लोहड़ी पर्व के अवसर पर मैंने पंजाबी सलवार-सूट पहनकर भांगड़ा नृत्य में भाग लिया। बंगाल की लाल किनारी वाली सफेद साड़ी भी मुझे बहुत सुंदर लगती है। जब मैंने हमारे विद्यालय की ओर से ‘भारत पर्व’ में भाग लिया, तो उसमें मैंने कश्मीर की फेरन पहनी थी। यह देखकर मेरे दोस्त कह रहे थे “शताक्षी, तुम तो बिल्कुल कश्मीरी गुड़िया लग रही हो!”





हमारे स्कूल में प्रति वर्ष “भारतीय परिधान दिवस” मनाया जाता है। उस दिन सभी बच्चे अपनी मनपसंद राज्य की वेश-भूषा पहनते हैं। मेरी सहेली अनुष्का प्रति वर्ष गुजराती घाघरा पहनती है, और मैं हर बार कुछ नया पहनने का प्रयास करती हूँ। दादी कहती हैं पारंपरिक कपड़े पहनकर हमें अपनी जड़ों से जुड़ने का अनुभव होता है। वे कहती हैं, “कपड़े सिर्फ शरीर नहीं ढँकते, वे हमारी संस्कृति को संभालते हैं।”

मुझे गर्व है कि मैं भारतीय हूँ और मेरी संस्कृति मेरी वेश-भूषा में हर दिन मुझसे मिलती है।

शताक्षी जोशी
कक्षा–5
आर्मी पब्लिक स्कूल, बरेली कैंट, उत्तर प्रदेश

ARTICLE

Handlooms of India: A Pillar of Social, Cultural and Economic Identity

Indian textile has a rich history. Indian weavers have shaped and conserved a cultural legacy that is both artistic and symbolic, sketching from the banks of the Indus to that of the Ganges. India's weavings are more than just clothes, they tell stories of places, histories, communities, and age-old techniques that have been handed down through the years.

Traditionally, Indian handlooms are considered the back bone of textile industry. Local resources, climate, and customs have all influenced the development of distinctive weaving styles and techniques in each place. Despite their diversity, these weaves reflect India's heterogeneity in terms of identity and artistry.

Kancheepuram: The South's Royal Silk (Tamil Nadu)

Hailing from Kancheepuram, this weave is famous for its durability and brilliance. Woven with pure mulberry silk and golden threads, Kancheepuram sari often feature temple borders, mythological figures, and checks, making them integral to South Indian ceremonial wear.



Patola: The Double Ikat Marvel (Gujarat)

Patola sari are labour-intensive and known for their geometric precision. The technique, where both warp and weft threads are resist-dyed before weaving, is practised by only a few families in Patan. A single sari can take months to complete.

Pochampally Ikat: Vibrancy in Every Thread (Telangana)

Another celebrated ikat form, Pochampally sari blend intricate dyeing with rhythmic patterns. Recognised with a GI (Geographical Indication) tag, this weave exemplifies the fusion of tradition with innovation.

Banarasi Sari: A Symbol of Opulence and Tradition (Uttar Pradesh)

Among the most coveted Indian weaves, the Banarasi silk sari is known for its intricate brocade, Mughal-inspired floral designs, and rich use of gold and silver zari. Once reserved for royalty, today it adorns brides.

Chanderi & Maheshwari: Lightweight Graceful (Madhya Pradesh)

While Chanderi fabrics are known for their sheer texture and delicate motifs like peacocks and lotuses, Maheshwari weaves are identifiable by their reversible borders

and subdued elegance. These sari are popular for their comfort and timeless charm.

Jamdani: The Woven Poetry (West Bengal)

Woven from fine muslin, Jamdani is a UNESCO-recognised heritage craft. It uses discontinuous weft techniques to create motifs that seem to float on the surface. The sari are treasured for their softness and intricacy.

Bandhani: Dots of Celebration (Rajasthan & Gujarat)

Bandhani is the tie-dye technique that creates dotted patterns in vibrant colours. Worn during festivals and rituals, the patterns and colours carry symbolic meanings of fertility, prosperity, and joy.

Kalamkari: Traditional Fabric (Andhra Pradesh & Telangana)

Literally meaning 'pen work', Kalamkari includes hand-painted and block-printed textiles featuring mythological stories. These fabrics are not just worn, but displayed as art and storytelling devices.

Baluchari: Stories on Silk (West Bengal)

Baluchari sari, woven in Murshidabad, are distinguished by their narrative *pallus*, which depict scenes from epics like the Mahabharata and Ramayana. The combination of fine silk and cultural storytelling makes these weaves unique.

An act of cultural preservation, wearing a handloom is more than just a fashion statement. We uplift the aspirations and dignity of thousands of Indian craftspeople by promoting these weaves.

India's traditional textiles are living, breathing things that capture the nation's diverse cultural heritage, not merely artifacts from the past. Every thread relates a tale of artistry, character, and heritage. Handlooms become both a privilege and a responsibility as we strive for a sustainable future rooted in cultural richness and heritage.

Atharv Saxena
Class–XI
Kendriya Vidyalaya No. 2, Sagar, MadhyaPradesh





EVENT

राष्ट्रीय अंतरिक्ष दिवस–2025
आर्यभट्ट से गगनयान तक

23 अगस्त 2025 को नई दिल्ली के प्रगति मैदान परिसर में स्थित भारत मंडपम में द्वितीय राष्ट्रीय अंतरिक्ष दिवस समारोह आयोजित किया गया। समारोह का आयोजन भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) द्वारा किया गया। इस कार्यक्रम में भारत के अंतरिक्ष यात्री शुभांशु शुक्ला तथा गगनयान मिशन के लिए चयनित उनके साथी— भारतीय वायुसेना के ग्रुप कैप्टन प्रशांत बालकृष्णन नायर, ग्रुप कैप्टन अजीत कृष्णन और ग्रुप कैप्टन अंगद प्रताप भी उपस्थित रहे।

इस कार्यक्रम को माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने आभासी माध्यम से संबोधित किया। उन्होंने देशवासियों को द्वितीय राष्ट्रीय अंतरिक्ष दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ दीं और अपने संबोधन में कहा कि *इस बार के अंतरिक्ष दिवस की थीम 'आर्यभट्ट से गगनयान' तक है। इसमें अतीत का आत्मविश्वास भी है और भविष्य का संकल्प भी। आज हम देख रहे हैं कि इतने कम समय में ही राष्ट्रीय अंतरिक्ष दिवस हमारे युवाओं के बीच उत्साह और आकर्षण का विषय बन गया है। यह देश के लिए गौरव की बात है।*

उन्होंने आगे कहा कि *अंतरिक्ष क्षेत्र में एक के बाद एक नई उपलब्धि प्राप्त करना, ये भारत और भारत के वैज्ञानिकों का स्वभाव बन गया है। दो साल पहले ही भारत ऐसा पहला देश बना था, जिसने चंद्रमा के दक्षिणी ध्रुव पर पहुँचने का इतिहास रचा। हम उन देशों में भी शामिल हो गए हैं, जिन्होंने अंतरिक्ष में डॉकिंग और अनडॉकिंग की क्षमता हासिल कर ली है।*

प्रधानमंत्री जी ने कैप्टन शुभांशु शुक्ला की ऐतिहासिक अंतरिक्ष उड़ान का उल्लेख करते हुए कहा *शुभांशु शुक्ला ने इंटरनेशनल स्पेस स्टेशन पर तिरंगा फहराकर हर भारतीय को गर्व से भर दिया। जब वो तिरंगा मुझे दिखा रहे थे, जो वो पल और अनुभूति थी। वो शब्दों से परे हैं। आज भारत सेमी, क्रायोजेनिक इंजन और इलेक्ट्रिक प्रोपल्शन जैसी महत्वपूर्ण तकनीकों की दिशा में तेजी से आगे बढ़ रहा है। शीघ्र ही अपने*





वैज्ञानिकों के परिश्रम से गगनयान भी सफलता की उड़ान भरेगा और आने वाले समय में भारत अपना स्पेस स्टेशन भी बनाएगा।

इस अवसर पर केंद्रीय विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंत्री डॉ. जितेंद्र सिंह, इसरो के अध्यक्ष वी. नारायणन सहित अनेक शिक्षाविद, उद्यमी, विद्यार्थी और बड़ी संख्या में विज्ञानप्रेमी आमजन भी उपस्थित रहे।



क्यों मनाया जाता है राष्ट्रीय अंतरिक्ष दिवस?

राष्ट्रीय अंतरिक्ष दिवस का आयोजन वर्ष 2024 से प्रारंभ हुआ। यह दिन भारत के चंद्रयान-3 मिशन की सफलता की स्मृति में मनाया जाता है। उल्लेखनीय है कि 23 अगस्त 2023 को चंद्रयान-3 ने विक्रम लैंडर की सहायता से चंद्रमा की सतह पर सफलतापूर्वक सॉफ्ट लैंडिंग की थी।

इस उपलब्धि के साथ भारत चंद्रमा पर उतरने वाला विश्व का चौथा और उसके दक्षिणी ध्रुवीय क्षेत्र के समीप उतरने वाला पहला देश बना। इसी ऐतिहासिक सफलता की वर्षगाँठ पर राष्ट्रीय अंतरिक्ष दिवस प्रतिवर्ष 23 अगस्त को मनाया जाता है।



My Memorable Journey to Jagannath Temple, Puri

Puri, in the state of Odisha, is a location I had only heard about in stories until I took a special trip there with my parents in December. I was ecstatic because we were going to see one of India's most significant temples, the renowned Jagannath Temple. This location is renowned for being known as Jagannath Puri. My journey to Puri Jagannath Temple was not just a trip—it was a feeling, a memory that will stay in my heart forever.

The journey itself felt magical. As the train moved through the green fields, small villages, and rivers, I looked outside and wondered how the temple would be. My grandmother had told me, "The Lord is not made of stone or metal. He is made of wood, and he smiles at all his children, big or small." I was very curious to meet this smiling god.

The First Glimpse of Puri

When we reached Puri, the cool sea breeze touched my face. The sky was soft blue, and the town was full of colours—flower shops, small carts selling prasad, and people wearing traditional clothes walking happily towards the temple.

It felt like the entire town was alive and preparing for something grand. I could hear bells ringing from far away. It felt like Lord Jagannath himself was calling me with love.

As we walked through the narrow streets leading to the temple, I felt a mix of joy and respect. Every person there looked peaceful and happy. It was as if the temple was not just a building, but a living, breathing heart of the town.

The Temple That Speaks

When I saw the Jagannath Temple for the first time, I was amazed. The tall top touched the sky, and a big flag waved proudly ovet it. I imagined the temple as an old king, standing with grace and pride, watching over his people with love.

We stood in line to enter the temple. The stones under my feet were warm from the sun. I felt I was walking on something very sacred. Inside the temple, the air was different. It smelled of sandalwood, kapoor (camphor), and flowers. I could hear the sound of the *shankh* (conch shell), and chants. It felt like I had stepped into another world—a world of faith, of history, and of love.

Meeting Lord Jagannath

When I saw the idols of Lord Jagannath, Balabhadra, and Subhadra, I couldn't move for a few moments. They were unlike any other gods I had seen before. Big round eyes, smiling faces, and a devotion that reached straight into my heart. Even though the idols are simple, they feel alive. It was as if Lord Jagannath was saying, 'Don't be afraid. I am here for everyone.'

I joined my hands and closed my eyes. I didn't ask for anything. I just stood there, feeling peaceful. It was like meeting an old friend after a long time. The priests were singing, the lamps were glowing, and my heart felt full of joy.

The Kitchen of Love

After the darshan, we went to the temple's kitchen—one of the largest in the world. It is said that various types of food are cooked every day as an offering to the Lord. The food is made in clay pots using traditional methods. What surprised me most was that even though they cook for thousands of people, nothing ever goes to waste. We got to taste the *maha prasad* (holy food). It was simple—rice, dal, vegetables, and sweets — but it tasted heavenly. I imagined the food smiling and saying, 'I was made with love. That's why I taste so good.'

The Sea and the Chants

Later, we walked to the Puri beach, which is just a few minutes away from the temple. The waves were jumping like children, and the wind was playing with my hair. I sat on the sand and looked at the ocean. It was big, endless, and full of secrets.

I thought about the temple, the Lord, and everything I had seen. I felt very lucky. The sea seemed to say, 'You have seen something beautiful today. Carry that peace with you wherever you go.'

Stories in the Wind

At night, I sat with my parents outside our hotel and listened to stories from a kind local uncle. He told us about the Rath Yatra, when the three deities come out of the temple in giant chariots and travel through the streets of Puri. People from all over the world come to pull the chariots. He said, 'On that day, the Lord comes out to meet his people. No one is big or small. All are his children.'

I imagined the giant wheels rolling, people chanting, flowers flying in the air and Lord Jagannath smiling wide. I promised myself that one day I would come again to see the Rath Yatra with my own eyes.

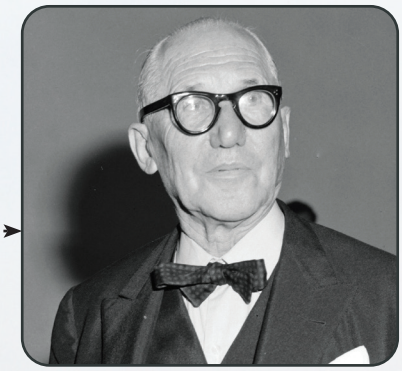
What I Felt and Learned?

I learned that faith is not about rules. It's about love. Lord Jagannath doesn't look like other gods, but he feels like a father, a friend, and a guide. The temple doesn't speak in words, but you can still hear it in your heart. When we left Puri, I looked back at the temple one last time. The flag was still flying high. I thought the wind was saying to me in my ears, 'Come back soon, my little devotee.'

Bishal Malakar
Class–VIII
Montfort School, Hyderabad, Telangana

STATE/U.T. TRIVIA

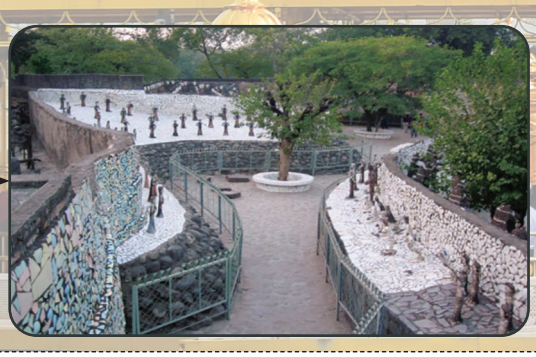
CHANDIGARH



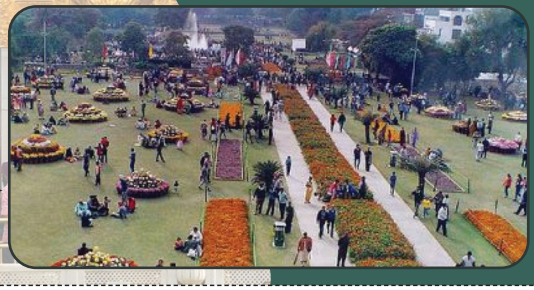
Chandigarh was planned by the famous Swiss-French architect Le Corbusier. Picturesquely located at the foothills of the Shivaliks, it is known as one of the best experiments in urban planning and modern architecture in the twentieth century in India.



Chandigarh derives its name from the temple of 'Chandi Mandir' located in the vicinity of the site selected for the city. The deity 'Chandi', the goddess of power and a fort of 'garh' laying beyond the temple gave the city its name 'Chandigarh-The City Beautiful'.



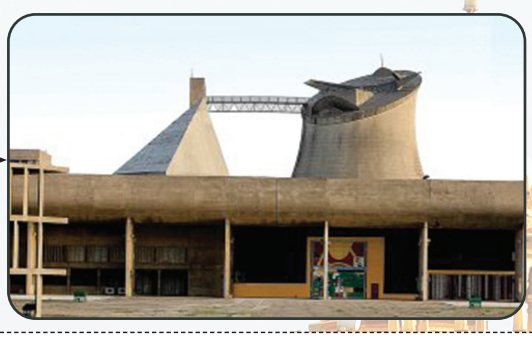
Stones, bricks, recycled ceramics, and several other industrial remnants of the city are used to create the sculptures in Chandigarh's Rock Garden.



It's named after India's former President, Zakir Hussain. The park is spread over 40.23 acres approximately and exhibits some of rarest and exquisite varieties of rose and is home to 1,600 varieties of flowers.



Sukhna Lake is a reservoir at the foothills (Shivalik Hills) of the Himalayas. This 3 square kilometres rainfed lake was created in 1958 by damming the Sukhna Choe, a seasonal stream coming down from the Shivalik Hills.





Capitol Complex is a UNESCO World Heritage Site. It's one of the most monumental architectural compositions of modern architecture by Le Corbusier, arising out of unique geopolitical and cultural setting. The Capitol Complex is strategically located at the Geographic and Topographic 'Head' of the city against the back-drop of Shivalik Hills.



Dolls play a vital role in developing social, emotional and language skills in children and also train them to interact with others. It was established in 1985 in complex of Bal Bhawan. It also has colourful life- size cutouts of dolls with hollow space for kids.



The Natural History Museum was founded by Dr. M.S. Randhawa, the first Chief Commissioner of the Union Territory and a renowned biologist. The museum has major sections namely as Redefining Our Past, Cyclorama of Evolution of Life, Dinosaur of India, and Human Evolution.

Botanical Garden has been developed on 176 acres in village Sarangpur, which will consist of 15 botanical sections and other features to promote eco-tourism.





Career in Textile Industry

The textile industry is considered as one of the largest employment generators. The Ministry of Textiles reported a 7% increase in textile and apparel exports, including handicrafts, from April to December 2024, compared to the same period the previous year. In line with the growth roadmap, the Indian textile market currently ranks fifth globally, and the government is actively working to accelerate this growth to a rate of 15-20 per cent over the next five years.

Government Schemes to Create Job Opportunities

The government schemes like Production Linked Incentive (PLI) Scheme and seven Mega Integrated Textile Region and Apparel (MITRAs), to raise the textile industry's level of global competitiveness. The industry is facing shortage of skilled workers and provides many opportunities for unemployed youth in the country who are trained in the sector. To address the issue, Central government of India has launched Scheme for Capacity Building in Textile Sector (SCBTS) and named it SAMARTH Scheme.

Career Opportunities

Role	Responsibility
Textile Engineer	To innovate and optimise production across fibres, yarns, and fabrics
Textile Machine Operator	In charge correctly and safely operating machinery. They might operate machinery that processes synthetic fibres or raw materials, prints designs, dyes, finishes, etc.
Production Manager	To coordinate the team of line operators and warehouse personnel to meet the daily performance goals
Spinning Manager	To supervise spinning operations, manage labour and machine output
Weaving Supervisor	To ensure smooth loom operations and defect-free fabric production
Textile Quality Control Inspector	To inspect raw materials, conduct lab testing, and enforce Quality Control standards
Textile Product Developer	Design functional fabrics for healthcare, automotive, and defence
Fashion Designer	The creative minds behind collection of apparel, accessories, and shoes are known as fashion designers. Select textiles, draft designs, and manage the creation's manufacturing.
Fashion Photographers	Conduct photo shoots for magazines, ads, and websites to capture the visual essence of fashion. In collaboration with models, stylists, and creative directors, they create striking visuals that accentuate the finest aspects of fashion shows
Fashion Merchandiser	A fashion retail store's inventory is the responsibility of a fashion merchandiser. In addition to selecting items to offer that best complement their store's aesthetic, they might recognise and forecast fashion industry trends.

* *This is not an exhaustive list and more career option exist.*

Renowned Institutions offering the course:

- **National Institute of Fashion Technology (NIFT),** Delhi and campuses at Chennai, Gandhinagar, Kolkata, Hyderabad, Mumbai, Bengaluru. The new millennium witnessed emergence of new campuses in Bhopal, Bhubaneswar, Jodhpur, Kangra, Kannur, Patna, Raebareli and Shillong. The campus at Srinagar in Jammu & Kashmir is the newly added node to NIFT's network.
- **Apparel Training & Design Centre (ATDC),** has numerous locations across India, including headquarters in Gurugram, and specific centres in Noida, Mumbai, Surat, Raipur, and Dilshad Garden in Delhi, with more centres in other states like Chhattisgarh, Maharashtra, and Gujarat
- **Sardar Vallabhbhai Patel International School of Textiles & Management, Coimbatore, Tamil Nadu** https://svpistm.ac.in/
- **Uttar Pradesh Textile Technology Institute (UPTTI), Kanpur** https://uptti.ac.in/
- **Institute of Chemical Technology (ICT), Mumbai** https://www.ictmumbai.edu.in/
- **Indian Institute of Technology (IIT), Delhi** https://home.iitd.ac.in/
- **Government Polytechnic, Nagpur, Maharashtra** https://gpnagpur.ac.in/
- **Government Polytechnic, Solapur** https://gpsolapur.ac.in/
- **Government Polytechnic, Pune** https://gppune.ac.in/
- **Government Polytechnic, Nashik** https://gpnashik.ac.in/
- **Indian institute of Handloom Technology, Salem** https://www.iihtsalem.edu.in/
- **The Technological Institute of Textile and Sciences, Haryana** https://titsbhiwani.ac.in/
- **Government Institute of Textile Technology, Guntur** https://gittguntur.ac.in/
- **The Maharaja Sayajirao University of Baroda (MSU), Vadodara** https://www.msubaroda.ac.in/
- **Government College Of Engineering& Textile Technology, Berhampore,** http://www.gcettb.ac.in/

* *This is not an exhaustive list and more institutions exist.*



Riddles

1. I make plants green, help you see,
   But I'm not water or air,
   I travel millions of kilometres,
   And disappear when clouds cover the sky.
   What am I?





2. Forward I am heavy,
   but backward I am not.
   What am I?



3. Two fathers and two sons go fishing.
   Each catches one fish, but only three fish are caught.
   How is this possible?



4. I'm a 6-letter word.
   I'm full of holes but still hold water.
   What am I?



5. What gets wetter, the more it dries?

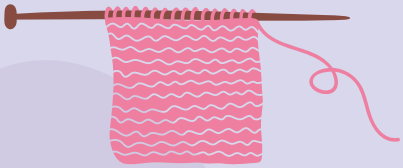
*Answers on Page no. 64

Word Search

S	H	A	R	A	R	A	S	U	I	T	Q	O	X	D	Y
A	N	A	R	K	A	L	I	S	U	I	T	M	G	H	F
R	Z	F	C	P	U	Q	J	F	B	Z	N	L	Y	O	K
I	O	S	H	H	C	R	D	S	K	F	J	A	K	T	E
E	X	A	A	F	K	I	T	V	O	N	A	B	R	I	T
G	D	L	N	I	B	A	P	A	E	U	N	B	F	K	X
K	R	W	I	Y	D	H	N	O	P	Q	R	J	X	U	J
G	D	A	N	I	U	A	P	A	E	U	N	B	F	R	X
H	P	R	A	H	P	Y	T	E	H	R	T	O	F	T	V
N	E	K	C	X	A	T	Z	E	A	R	S	S	Z	A	Q
T	U	A	H	U	T	N	R	R	X	O	E	U	U	I	O
I	E	M	O	N	T	W	A	K	S	S	W	V	L	B	I
A	T	E	L	Y	A	M	E	T	X	C	O	T	O	Q	G
K	O	E	I	N	T	T	D	F	A	E	D	R	H	C	N
Q	C	Z	I	E	T	J	P	Y	Y	L	N	S	H	O	U
L	E	H	E	N	G	A	C	H	O	L	I	V	A	K	L

WORDS HIDDEN ABOVE

Sari
Sharara suit
Indo Western
Lehenga choli
Dhoti kurta
Lungi
Anarkali suit
Chaniya choli
Salwar kameez
Dupatta



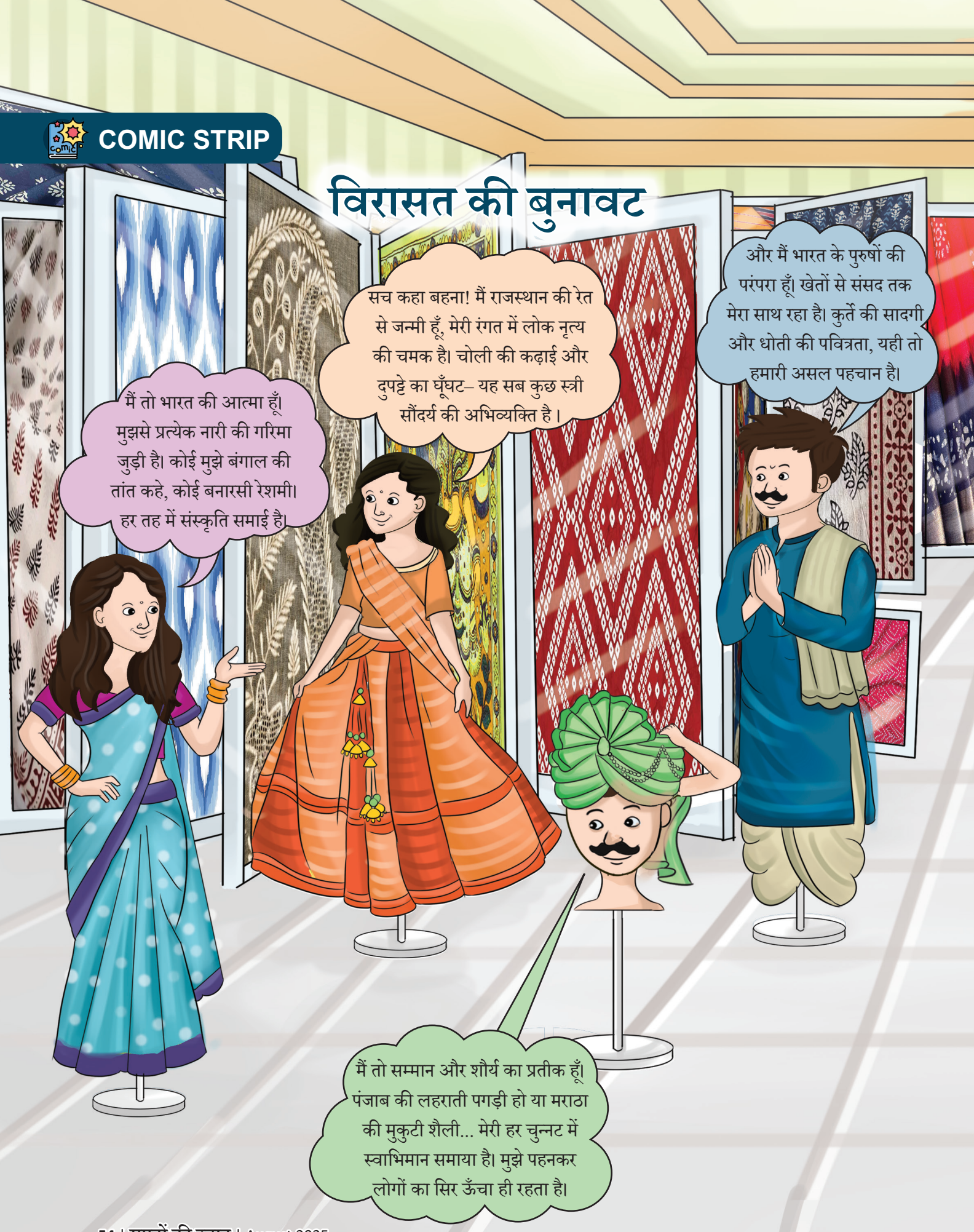


Anushka Bhaiya
Class–VI
India International School, Jaipur, Rajsthan

*Answers on Page no. 64

COMIC STRIP

विरासत की बुनावट





प्रिशा भाटिया
कक्षा–11
ब्रह्मदत्त ब्लूबेल्स पब्लिक स्कूल, गुरुग्राम, हरियाणा



ਸਫ਼ਰਨਾਮਾ

ਰਿਵਾਇਤੀ ਲਿਬਾਸ

'ਪੰਜਾਬ ਦਾ ਪੈਰਿਸ' ਕਹਾਉਣ ਵਾਲ਼ਾ ਮੇਰਾ ਸ਼ਹਿਰ ਕਪੂਰਥਲਾ, ਜਿਥੋਂ ਦਾ ਮਹਾਰਾਜਾ ਜਗਤਜੀਤ ਸਿੰਘ ਤੇ ਉਸਦਾ ਪੈਲਸ ਜੋ ਕਿ ਅੱਜਕੱਲ੍ਹ ਸੈਨਿਕ ਸਕੂਲ ਦੇ ਨਾਮ ਨਾਲ ਜਾਣਿਆ ਜਾਂਦਾ ਹੈ, ਬਹੁਤ ਹੀ ਮਸ਼ਹੂਰ ਰਿਹਾ ਹੈ । ਏਸੇ ਹੀ ਜ਼ਿਲ੍ਹੇ ਦੇ ਇੱਕ ਛੋਟੇ ਜਿਹੇ ਪਿੰਡ ਬੂਹ ਵਿਚ ਮੈਂ ਵੱਖ - ਵੱਖ ਤਰ੍ਹਾਂ ਦੇ ਪਹਿਰਾਵੇ ਬਚਪਨ ਤੋਂ ਹੀ ਦੇਖਦੀ ਆ ਰਹੀ ਹਾਂ । ਜਿਉਂ - ਜਿਉਂ ਮੇਰੀ ਸਮਝ ਵਿੱਚ ਵਾਧਾ ਹੁੰਦਾ ਗਿਆ, ਮੇਰੀ ਰੁਚੀ ਇਹਨਾਂ ਪਹਿਰਾਵਿਆਂ ਪ੍ਰਤੀ ਵੱਧਣ ਲੱਗੀ । ਇਹ ਜਾਨਣ ਦੀ ਚੇਟਕ ਨੇ ਮੈਨੂੰ ਕਈ ਸ਼ਹਿਰਾਂ ਦੀ ਸੈਰ ਵੀ ਕਰਵਾਈ । ਮੇਰਾ ਸਫ਼ਰ ਸ਼ੁਰੂ ਹੁੰਦਾ ਹੈ ਆਪਣੇ ਸ਼ਹਿਰ ਕਪੂਰਥਲਾ ਤੋਂ, ਜਿਥੋਂ ਦੇ ਬਜ਼ਾਰ ਦੀਆਂ ਗਲੀਆਂ ਵਿੱਚ ਮੈਂ ਨਿੱਕੀ ਹੁੰਦੀ ਤੋਂ ਜਾਂਦੀ ਰਹੀ ਸੀ, ਪਰ ਅੱਜ ਦਾ ਇਹ ਸਫ਼ਰ ਕੁਝ ਅਲੱਗ ਸੀ । ਕਪੂਰਥਲਾ ਦੇ ਬੱਸ ਸਟੈਂਡ ਤੋਂ ਸੱਤ ਨਾਰਾਇਣ ਮੰਦਿਰ ਤੋਂ ਸਿੱਧਾ ਜਾ ਕੇ ਸ਼ਹੀਦ ਭਗਤ ਸਿੰਘ ਚੌਂਕ ਤੋਂ ਸੱਜੇ ਮੋੜ ਲੈ ਕਿ ਸ਼ੁਰੂ ਹੁੰਦਾ ਹੈ ਸਦਰ ਬਜ਼ਾਰ ਜੋ ਕਿ ਰਵਾਇਤ ਅਤੇ ਅਯੋਕੇ ਕੱਪੜਿਆਂ ਦੀ ਖਾਨ ਨਾਲੋਂ ਘੱਟ ਨਹੀਂ । ਪੁਰਾਤਨ ਸਮੇਂ ਵਿੱਚ ਕਪੂਰਥਲਾ ਦੀਆਂ ਰਾਜਕੁਮਾਰੀਆਂ ਨੇ ਸ਼ਾਹੀ ਲਿਬਾਸਾਂ ਦੀ ਪਰੰਪਰਾ ਨੂੰ ਨਵੀਂ ਪਹਿਚਾਣ ਦਿੱਤੀ ।

ਰੇਸ਼ਮੀ ਸ਼ਰਾਰੇ, ਸੁਨਹਿਰੀ ਦੁਪੱਟੇ ਤੇ ਫਿਨਿਸ਼ ਕੀਤੀਆਂ ਜੁੱਤੀਆਂ ਇਥੋਂ ਦੇ ਰਾਜਸੀ ਲਿਬਾਸ ਦਾ ਹਿੱਸਾ ਰਹੇ ਹਨ । ਕਪੂਰਥਲਾ ਵਿੱਚ ਰਾਜ ਦਰਬਾਰ ਵਿੱਚ ਪਹਿਨੇ ਜਾਣ ਵਾਲ਼ੇ ਲਿਬਾਸ ਅਕਸਰ ਫਰਾਂਸੀਸੀ ਅਤੇ ਮੁਗ਼ਲ ਸੁਟੇਲਾ ਦਾ ਰੂਪ ਸੀ ।

ਕਪੂਰਥਲਾ ਦੇ ਸਦਰ ਬਜ਼ਾਰ ਵਿਚ ਜ਼ਰਦੋਜ਼ੀ ਕਢਾਈ, ਨਕਸ਼ੀਦਾਰ ਫੈਬਰਿਕ ਅਤੇ ਪੱਛਮੀ ਅੰਦਾਜ਼ ਦੇ ਨਾਲ਼ ਪੰਜਾਬੀ ਰੰਗਾਂ ਦੀ ਝਲਕ ਵੇਖਣ ਨੂੰ ਮਿਲੀ ਜੋ ਕਪੂਰਥਲਾ ਦੀ ਪੰਜਾਬ ਵਿਚ ਇੱਕ ਵਿਲੱਖਣ ਥਾਂ ਬਣਾਉਂਦਾ ਹੈ ।

ਇੱਥੇ ਦੇ ਰਵਾਇਤੀ ਮਲਮਲ ਦੇ ਦੁਪੱਟੇ, ਨਿੱਘੇ ਕੱਪੜਿਆਂ 'ਚ ਰਾਜਸੀ ਨਰਮੀ ਅਤੇ ਸੁਚੱਜੀ ਪੱਗਾਂ ਦੀ ਸਜਾਵਟ ਨੇ ਦੱਸਿਆ ਕਿ ਕਪੂਰਥਲੇ ਦੀ ਫੈਸ਼ਨ ਸੰਸਕ੍ਰਿਤੀ ਵਿਲੱਖਣ ਰਹੀ ਹੈ ।

ਪੰਜਾਬ ਦੇ ਪੈਰਿਸ ਦੀ ਸੈਰ ਕਰਨ ਤੋਂ ਬਾਅਦ ਅਤੇ ਇਥੋਂ ਦੀ ਰਵਾਇਤੀ ਅਤੇ ਅਜੋਕੇ ਕੱਪੜੇ ਦੀ ਵਿਲੱਖਣਤਾ ਨੂੰ ਜਾਨਣ ਤੋਂ ਬਾਅਦ ਮੈਂ ਆਪਣੇ ਸਫ਼ਰ ਨੂੰ ਅੱਗੇ ਵਧਾਇਆ ਅਤੇ ਰੇਲ ਗੱਡੀ ਰਾਹੀਂ ਪਹੁੰਚ ਗਈ ਧਾਰਮਿਕ ਮਹੱਤਤਾ ਰੱਖਦੇ ਅਤੇ ਪੰਜਾਬ ਦੇ ਦਿਲ ਸ੍ਰੀ ਅੰਮ੍ਰਿਤਸਰ ਸਾਹਿਬ । ਇਸ ਸ਼ਹਿਰ ਦਾ ਨਾਮ ਸੁਣਦਿਆਂ ਹੀ ਸਿਰ ਆਪਣੇ ਆਪ ਝੁਕ ਜਾਂਦਾ ਹੈ । ਸ੍ਰੀ ਦਰਬਾਰ ਸਾਹਿਬ ਮੱਥਾ ਟੇਕਣ ਤੋਂ ਬਾਅਦ ਆਪਣੀ ਕੱਪੜਿਆਂ ਦੀ ਜਾਣਕਾਰੀ ਨੂੰ ਵਧਾਉਣ ਲਈ ਪਹੁੰਚੀ ਅੰਮ੍ਰਿਤਸਰ ਦੀ ਮਸ਼ਹੂਰ ਮਾਰਕੀਟ ਕੱਟੜਾ ਜੈਮਲ ਸਿੰਘ ।

ਬਜ਼ਾਰ ਵਿਚਲੀ ਭੀੜ ਇਹ ਦੱਸਦੀ ਸੀ ਕਿ ਲੋਕਾਂ ਦੇ ਆਕਰਸ਼ਣ ਦਾ ਮੁੱਖ ਕਾਰਨ ਵਿਭਿੰਨਤਾ ਤੇ ਗੁਣਵੱਤਾ ਭਰਪੂਰ ਵੱਖ-ਵੱਖ ਰੰਗਾਂ ਦੇ ਕੱਪੜੇ ਹਨ । ਇੱਥੇ ਮੈਨੂੰ ਮਿਲੇ ਬੇਬੇ ਅਮਰਜੀਤ ਕੌਰ ਜੀ, ਜਿਨ੍ਹਾਂ ਨੇ ਮੈਨੂੰ ਦੱਸਿਆ ਕਿ ਇੱਥੇ ਦੀ ਮਸ਼ਹੂਰ ਫੁਲਕਾਰੀ ਰੰਗੀ, ਚਮਕਦਾਰ ਅਤੇ ਥਾਂ - ਥਾਂ ਤੇ ਖਿੜੇ ਹੋਏ ਫੁੱਲਾਂ ਵਰਗੀਆਂ ਪੰਜਾਬੀ ਮਹਿਲਾਵਾਂ ਲਈ ਇੱਕ


Sainik School, Kapurthala



ਅਜਿਹੀ ਕਲਾ ਹੈ ਜੋ ਪੀੜ੍ਹੀ ਦਰ ਪੀੜ੍ਹੀ ਚਲਦੀ ਆ ਰਹੀ ਹੈ। ਇਹ ਕੱਪੜੇ ਸਿਰਫ ਪਹਿਰਾਵੇ ਨਹੀਂ, ਸਗੋਂ ਪਿਆਰ, ਅਸ਼ੀਰਵਾਦ ਤੇ ਵਿਸ਼ਵਾਸ਼ ਦੇ ਸੂਤਰ ਹਨ।

ਬਜ਼ਾਰਾਂ ਵਿੱਚ ਔਰਤਾਂ ਸਲਵਾਰ-ਕਮੀਜ਼ ਅਤੇ ਰੰਗ-ਬਿਰੰਗੇ ਦੁਪੱਟਿਆਂ ਵਿੱਚ ਘੁੰਮਦੀਆਂ ਨਜ਼ਰ ਆਈਆਂ, ਜਦਕਿ ਮਰਦਾਂ ਨੇ ਆਪਣੀ ਪੱਗ ਨਾਲ਼ ਇੰਜਤ ਅਤੇ ਰਿਵਾਜ਼ ਨੂੰ ਜੀਵਤ ਕੀਤਾ ਹੋਇਆ ਸੀ।

ਅੰਮ੍ਰਿਤਸਰ ਦੀ ਸੈਰ ਨੇ ਮੈਨੂੰ ਇੱਥੋਂ ਦੇ ਮਸ਼ਹੂਰ ਅੰਮ੍ਰਿਤਸਰੀ ਕੁਲਚੇ ਤੇ ਲੱਸੀ ਦੇ ਸਵਾਦ ਦਾ ਆਨੰਦ ਵੀ ਦਵਾਇਆ। ਇਹ ਸ਼ਹਿਰ ਮੈਨੂੰ ਨਾ ਸਿਰਫ਼ ਧਰਮ ਦੀ ਚਮਕ ਨਾਲ ਮਿਲਿਆ, ਬਲਕਿ ਇਸ ਦੀ ਰੰਗ-ਬਿਰੰਗੀ ਰਵਾਇਤੀ ਪਹਿਰਾਵੇ ਦੀ ਵਿਲੱਖਣ ਝਲਕ ਨੇ ਵੀ ਮੇਰਾ ਮਨ ਮੋਹ ਲਿਆ।

ਰਾਤ ਦਰਬਾਰ ਸਾਹਿਬ ਦੀ ਸਰਾਂ ਵਿੱਚ ਕੱਟਣ ਤੋਂ ਬਾਅਦ ਸਵੇਰ ਦੀ ਪਹਿਲੀ ਕਿਰਨ ਨਾਲ ਹੀ ਮੈਂ ਆਪਣੇ ਸਫ਼ਰ ਨੂੰ ਅੱਗੇ ਵਧਾਉਣ ਲਈ ਪਹੁੰਚੀ ਅੰਮ੍ਰਿਤਸਰ ਦੇ ਬੱਸ ਸਟੈਂਡ ਅਤੇ ਉੱਥੇ ਮਿੱਟੀ ਤੇ ਲੋਕ ਰੰਗਾਂ ਦੇ ਸ਼ਹਿਰ ਬਠਿੰਡਾ ਦੀ ਬੱਸ ਵਿੱਚ ਬੈਠ ਗਈ ਜੋ ਕਿ ਵਾਇਆ ਤਰਨਤਾਰਨ, ਜ਼ੀਰਾ, ਫਰੀਦਕੋਟ ਤੋਂ ਹੁੰਦੀ ਹੋਈ ਜਾ ਪਹੁੰਚੀ ਬਠਿੰਡਾ।

ਬਠਿੰਡਾ ਇੱਕ ਐਸਾ ਸ਼ਹਿਰ ਹੈ, ਜਿਥੇ ਪਹਿਰਾਵਾ ਅਜੇ ਵੀ ਮਿੱਟੀ ਨਾਲ ਜੁੜਿਆ ਹੋਇਆ ਹੈ। ਇੱਥੇ ਲਹਿੰਗਾ, ਕੁੜਤੀ, ਓੜਣੀ ਅਤੇ ਜੁੱਤੀ ਲੋਕ ਰਿਵਾਜ਼ਾਂ ਦਾ ਅਟੁੱਟ ਹਿੱਸਾ ਹਨ।

ਮੈਨੂੰ ਮੌਕਾ ਮਿਲਿਆ ਮਲਵਈ ਗਿੱਧਾ ਦੇਖਣ ਦਾ। ਮਰਦਾਂ ਵਲੋਂ ਪਹਿਨੇ ਗਏ ਰੰਗ-ਬਿਰੰਗੇ ਕੁੜਤੇ ਅਤੇ ਪੱਗਾਂ ਨੇ ਰੰਗਾਂ ਦਾ ਮੀਂਹ ਵਰਾ ਦਿੱਤਾ। ਔਰਤਾਂ ਨੇ ਘੱਗਰੇ ਅਤੇ ਚੁੰਨੀਆਂ ਨਾਲ ਮੇਲੇ ਦੀ ਰੌਣਕ ਵਧਾਈ ਹੋਈ ਸੀ।

ਇੱਥੇ ਦੇ ਹੁਨਾਰਮੰਦਾਂ ਨੇ ਮੈਨੂੰ ਹੱਥੀਂ ਰੁੰਦੇ ਕੱਪੜੇ, ਕੁਦਰਤੀ ਰੰਗਾਂ ਅਤੇ ਪੁਰਾਤਨ ਨਕਸ਼ੇ ਵਿਖਾਏ ਜੋ ਅੱਜ ਵੀ ਪਿੰਡ ਦੀਆਂ ਔਰਤਾਂ ਅਤੇ ਲੋਕ ਕਲਾਕਾਰਾਂ ਰਾਹੀਂ ਜੀਵਤ ਹਨ।

ਥੋੜੇ ਸਮੇਂ ਵਿਚ ਸ਼ਹਿਰ ਬਠਿੰਡੇ ਨੂੰ ਸਤਿ ਸ੍ਰੀ ਅਕਾਲ ਬੁਲਾ ਕੇ ਮੈਂ ਰੇਲ ਗੱਡੀ ਰਾਹੀਂ ਚੱਲ ਪਈ। ਆਪਣੇ ਸਫ਼ਰ ਨੂੰ ਅੱਗੇ ਵਧਾਉਣ ਲਈ ਅਤੇ ਲਗਭਗ ਦੋ ਘੰਟਿਆਂ ਦੇ ਸਫ਼ਰ ਤੋਂ ਬਾਅਦ ਮੈਂ ਪਹੁੰਚੀ ਰਾਜਸੀ ਠਾਠ - ਬਾਠ ਵਾਲ਼ੇ ਸ਼ਹਿਰ ਪਟਿਆਲਾ ਵਿੱਚ, ਜੋ ਕਿ ਆਪਣੀ ਪ੍ਰੰਪਰਾਵਾਂ ਦੀ ਝਲਕ ਅਤੇ ਸ਼ਾਹੀ ਠਾਠ-ਬਾਠ, ਗੀਤਾਂ ਤੇ ਗਿੱਧਿਆਂ ਲਈ ਮਸ਼ਹੂਰ ਹੈ।

ਜਿਵੇਂ ਹੀ ਮੈਂ ਇੱਥੇ ਪਹੁੰਚੀ, ਇਹਨਾਂ ਦੀ ਰਵਾਇਤੀ ਪਟਿਆਲਾ ਸਲਵਾਰ ਨੇ ਮੇਰਾ ਧਿਆਨ ਖਿੱਚ ਲਿਆ - ਗੁੰਮਟਾਂ ਵਾਲ਼ੀ ਖੁੱਲ੍ਹੀ ਅਤੇ ਆਰਾਮਦਾਇਕ।

ਕਿਲ੍ਹਾ ਮੁਬਾਰਕ ਦੀ ਸੈਰ ਦੌਰਾਨ ਪਤਾ ਲੱਗਾ ਕਿ ਰਾਜ ਘਰਾਣਿਆਂ ਦੀਆਂ ਔਰਤਾਂ ਨੇ ਇਸ ਲਿਬਾਸ ਨੂੰ ਆਪਣੇ ਰੋਜ਼ਾਨਾ ਦੀ ਸੁਵਿਧਾ ਲਈ ਪਸੰਦ ਕੀਤਾ ਹੈ। ਇਨ੍ਹਾਂ ਨਾਲ਼ ਕੁੜਤੀ ਤੇ ਪਰਾਂਦੀ ਦਾ ਜੋੜ ਇਸਨੂੰ ਹੋਰ ਨਿਖਾਰ ਦਿੰਦਾ ਹੈ।

ਅਦਾਲਤ ਬਜ਼ਾਰ ਵਿੱਚ ਰੰਗ-ਬਿਰੰਗੀਆਂ ਜ਼ਰੀ, ਰੇਸ਼ਮੀ ਨਾਲੇ, ਗੋਟਾ-ਪੱਟੀ ਅਤੇ ਕਢਾਈ ਵਾਲੇ ਦੁੱਪਟੇ ਵੇਖ ਕੇ ਮਨ ਖੁਸ਼ ਹੋ ਗਿਆ। ਇੱਥੇ ਹਰ ਇੱਕ ਪਹਿਰਾਵਾ ਰਵਾਇਤ ਨਾਲ ਭਰਪੂਰ ਸੀ।

ਵੱਖ-ਵੱਖ ਬਜ਼ਾਰਾਂ ਨੂੰ ਘੁੰਮਣ ਤੋਂ ਬਾਅਦ ਤੇ ਵੱਖ-ਵੱਖ ਤਰਾਂ ਦੇ ਕੱਪੜਿਆਂ ਦੀ ਜਾਣਕਾਰੀ ਇਕੱਠੀ ਕਰਨ ਤੋਂ ਬਾਅਦ ਮੈਂ ਆਪਣੀ ਮਾਸੀ ਦੇ ਘਰ ਪਹੁੰਚੀ ਜੋ ਕਿ ਪਟਿਆਲਾ ਸ਼ਹਿਰ ਤੋਂ ਰਾਜਪੁਰਾ ਸੜਕ ਉੱਤੇ ਪੈਂਦੇ ਪਿੰਡ ਬਹਾਦਰਗੜ੍ਹ ਵਿੱਚ ਰਹਿੰਦੇ ਹਨ। ਰਾਤ ਮਾਸੀ ਕੋਲ ਰਹਿ ਕੇ ਅਗਲੇ ਦਿਨ ਪਟਿਆਲਾ ਤੋਂ ਕਪੂਰਥਲਾ ਦੀ ਰੇਲ ਗੱਡੀ ਨੇ ਮੈਨੂੰ ਘਰ ਪਹੁੰਚਾਇਆ।

ਜਿਵੇਂ ਹੀ ਮੇਰੀ ਯਾਤਰਾ ਮੁਕੰਮਲ ਹੋਈ ਮੈਨੂੰ ਅਹਿਸਾਸ ਹੋਇਆ ਕਿ ਪੰਜਾਬ ਦੀ ਖ਼ੂਬਸੂਰਤੀ ਸਿਰਫ ਖੇਤਾਂ ਜਾਂ ਖਾਣ-ਪੀਣ ਵਿੱਚ ਨਹੀਂ, ਸਗੋਂ ਇੱਥੇ ਦੇ ਪਹਿਰਾਵਿਆਂ 'ਚ ਵੀ ਹੈ।

ਇਹ ਸਫ਼ਰ ਇੱਕ ਸੈਰ ਹੀ ਨਹੀਂ, ਇਹ ਇਕ ਵਿਰਾਸਤ ਭਰੀ ਪਹਿਰਾਵਿਆਂ ਦੀ ਯਾਤਰਾ ਸੀ - ਜੋ ਕਦੇ ਨਾ ਭੁੱਲਣ ਵਾਲੀ ਹੈ।

Gurleen Kaur
Class–XI
GAD Public School, Kapurthala, Punjab

ARTICLE

Graceful Attires of India



Wondering who I am probably. I am an elegance, a piece of pride and beauty—a sari. I am not just a piece of cloth— I am history, identity, and art woven into six yards. I am a timeless witness to India's changing eras and enduring culture. From the looms of ancient civilisations to the closets of modern women in different styles.



Nauvari Sari: This is a long nine-yard sari which is draped in a dhoti style by women of Maharashtra. Nauvari sari give elegance to festive looks, acting as ethnic wear. they have become the pride of women as they carry the brave legacy of the Peshwa women and great warrior women such as Rani Laxmi Bai.

Salwar Kameez: Graceful, Modest, and Timeless

Salwaar Kameez and kurta pyjama from Punjab, Mekhla Chador from Assam, and obviously Mundum Neriyatham from Kerala where we are right now. Before the conversation, everything was awkward, everyone was silently observing each other's colourful patterns, we all knew that's what made us beautiful and different from each other. Every pattern, every piece of thread told and weaved stories of the hardwork our weavers have done and with these threads

we are tied to a fate reaching you all in form of gifts, festival wears and etc.

Now the Salwar Kameez broke the silence and introduced itself Namaste. I am the Salwar Kameez graceful, modest, and timeless. I was born in the grand courts of the Mughals, where royalty draped me in rich silks and intricate embroidery. Over the years, I stepped out of palaces and into the hearts of millions of women across North India. With my flowing kameez, comfortable salwar, and elegant dupatta, I have walked through fields, classrooms, weddings, and celebrations.

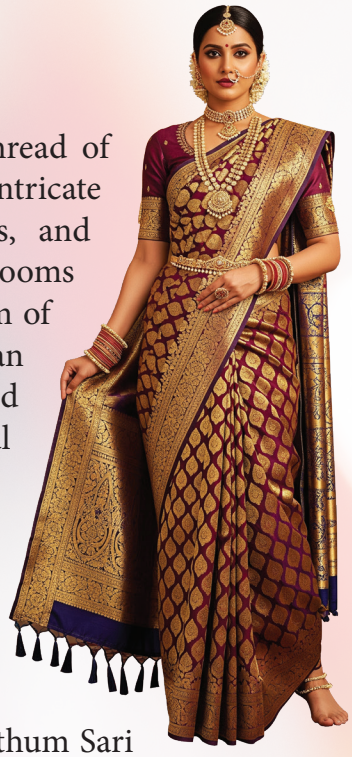
Mekhela Chador: The Traditional Attire of Assam



Next spoke the Mekhala Chador- I am the Mekhela Chador, the traditional attire of Assam — graceful, elegant, and deeply rooted in culture. Worn in two pieces, I wrap around like a sari but with my own unique identity. Handwoven in muga or cotton, I carry the warmth of Assamese tradition and the beauty of nature in my patterns. I have danced in Bihu, blessed weddings, and stood proudly in every Assamese woman's heart. I am not just clothing; I am heritage draped in dignity.

Tanchoi Banarasi Sari: A Delicate Blend of Art and Heritage

With Pride and love I spoke—Namaste! I am the Tanchoi Banarasi Sari, a delicate blend of art and heritage. Woven from fine silk without a single thread of zari, I shine through my intricate patterns of paisleys, florals, and brocades. Born in the handlooms of Banaras, I carry the charm of Persian influence and Indian craftsmanship. Draped in weddings and special occasions, I am soft to touch, rich to look at, and timeless in style.



Mundum Neriyathum: Kerala's Oldest and Purest Form of Traditional Attire

At last, the Mundum Neriyathum Sari spoke I am the Mundum Neriyathum. I am, Kerala's oldest and purest form of traditional attire. Woven in soft cotton and edged with golden borders, I dress women in simplicity, serenity, and grace.

I come in two pieces- the mundu (lower garment) and the neriyathu (upper drape) flowing white like purity, with a quiet dignity. I shine brightest during Onam, temple visits, and cultural celebrations. India's traditional clothing is not just fabric- it is living heritage, woven with stories of identity, culture, and pride.

Each garment, from the flowing sari to the elegant salwar kameez, from the vibrant Mekhela Chador to the graceful Mundum Neriyathum, carries the voice of history and the heart of a region. Though fashion evolves, these timeless attires continue to inspire and connect generations. They remind us that tradition is not old — it is eternal. Through every thread, India's soul is stitched into style.

Shreya Deepak Dayma
Class–VIII
Arya Gurukul Vidyanagari, Pune, Maharastra

POEM

Humming Threads



With threads and colours, a story is told,
Of India's beauty, timeless and bold.
A sari shines like morning light,
A turban stands tall proud and bright.

Kashmir weaves warmth with a gentleman's hand,
The Kanchipuram silk whispers of the beautiful land.
Banarasi sari so gorgeous and bright,
For men dhotis are their favourite side.

With festivals, songs, stories, and wedding bells,
Each garment hums with ancient strains.
Today we wear them with love and pride,
A heritage of threads and colours we walk beside.

Prativha Mahanta
Class–XII
PM SHRI Kendriya Vidyalaya, Coochbehar, West Bengal





Stump Your Friends

1. Set Mundu is the traditional attire of which state?
(a) Karnataka (b) Kerala
(c) Punjab (d) Mizoram

2. झीनी झीनी बीनी चदरिया निम्नलिखित में से किसकी रचना है?
(क) रैदास (ख) कबीरदास
(ग) सूरदास (घ) तुलसीदास

3. On the occasion of Independence Day, which scheme was announced by the Prime Minister to encourage the first job in the private sector?
(a) Pradhan Mantri Viksit Bharat Rojgar Yojana
(b) Pradhan Mantri Samarth Bharat Rojgar Yojana
(c) Pradhan Mantri Yuva Bharat Rojgar Yojana
(d) Pradhan Mantri Nav Bharat Rojgar Yojana

4. निम्नलिखित में से किस महान व्यक्ति ने संगीत नाटक अकादमी, नेशनल स्कूल ऑफ ड्रामा (एन.एस.डी.) और सांस्कृतिक स्रोत एवं प्रशिक्षण केंद्र (सी.सी.आर.टी.) आदि संस्थाओं की स्थापना में महत्वपूर्ण योगदान दिया?
(क) सरोजनी नायडू (ख) कमला देवी चट्टोपाध्याय
(ग) ऐनी बेसेंट (घ) गिरिजा देवी

5. When is the National Handloom Day celebrated?
(a) 5 July (b) 7 August
(c) 12 September (d) 30 June

6. निम्नलिखित में से किस विदेशी यात्री ने सातवीं सदी के भारतीयों की वेश-भूषाओं की जानकारी दी है?
(क) फाह्यान (ख) ह्वेनसांग
(ग) इत्सिंग (घ) बारबोसा

7. The famous Jagannath Temple is located in which of the following cities?
(a) Puri (Odisha)
(b) Bhubaneswar (Odisha)
(c) Berhampur (Odisha)
(d) Dwarka (Gujarat)

8. चंडीगढ़ शहर के वास्तुकार निम्नलिखित में से कौन थे?
(क) एडविन लुटियंस (ख) ली कार्बूसियर
(ग) हर्बर्ट बेकर (घ) उपरोक्त में से कोई नहीं

9. निम्नलिखित में से कौन-सा युग्म सही सुमेलित है—
(क) राष्ट्रीय हस्तशिल्प एवं हथकरघा संग्रहालय, नई दिल्ली
(ख) आशुतोष संग्रहालय, कोलकाता
(ग) कैलिको वस्त्र संग्रहालय, अहमदाबाद
(घ) उपरोक्त सभी

10. Which handcrafted sari was introduced by the famous Indian ruler Ahilyabai Holkar?
(a) Chanderi Sari (b) Maheshwari Sari
(c) Banarasi Sari (d) Kanchipuram Sari



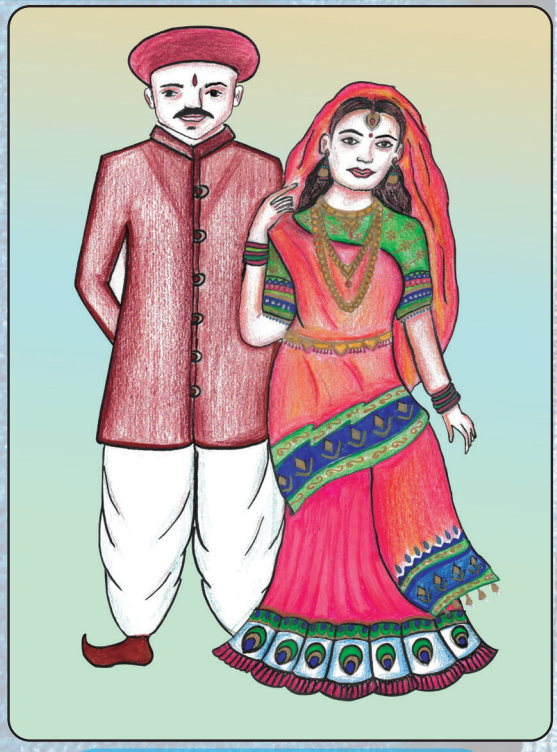
*Answers on Page no. 64



Pari
Class–X
Asha Modern International School, Saharanpur, Uttar Pradesh



Malavika P.A.
Class–XI
Jawahar Navodaya Vidyalaya, Ernakulam, Kerala



Meera T. Jiju
Class–XII
Jawahar Navodaya Vidyalaya,
Pathanamthitta, Kerala



Tashi Bansal
Class–V
Silver Oaks School, Bathinda, Punjab



Nandini
Class–XI
Arwachin International School, New Delhi



Ruhanika
Class–VI
Army Public School, Bathinda, Punjab

ANSWERS & CREDITS

Page no. 52: 1.Sunlight, 2. Ton/"Not" backward, 3. They are grandfather, father, and son, 4.Sponge, 5. A towel.

Page no. 53:

S	H	A	R	A	R	A	S	U	I	T	Q	O	X	D	Y
A	N	A	R	K	A	L	I	S	U	I	T	M	G	H	F
R	Z	F	C	P	U	Q	J	F	B	Z	N	L	Y	O	K
I	O	S	H	H	C	R	D	S	K	F	J	A	K	T	E
E	X	A	A	F	K	I	T	V	O	N	A	B	R	I	T
G	D	L	N	I	B	A	P	A	E	U	N	B	F	K	X
K	R	W	I	Y	D	H	N	O	P	Q	R	J	X	U	J
G	D	A	N	I	U	A	P	A	E	U	N	B	F	R	X
H	P	R	A	H	P	Y	T	E	H	R	T	O	F	T	V
N	E	K	C	X	A	T	Z	E	A	R	S	S	Z	A	Q
T	U	A	H	U	T	N	R	R	X	O	E	U	U	I	O
I	E	M	O	N	T	W	A	K	S	S	W	V	L	B	I
A	T	E	L	Y	A	M	E	T	X	C	O	T	O	Q	G
K	O	E	I	N	T	T	D	F	A	E	D	R	H	C	N
Q	C	Z	I	E	T	J	P	Y	Y	L	N	S	H	O	U
L	E	H	E	N	G	A	C	H	O	L	I	V	A	K	L

Page no. 60: 1–b, 2–ख, 3–a, 4–ख, 5–b, 6–ख, 7–a, 8–ख, 9–घ, 10–b

CREDITS

Page- 4 Wikimeadia Commons, Page- 5 Marathi Poshakh.jpg, Wikimeadia Commons, Page- 6 https://www.ncert.nic.in/pdf/publication/otherpublications/Unity_cultural.pdf, Page-7 wikimediacommons,, Page 9- www.pmindia.gov.in, Page 10- Tripura Risa- Wikimedia commons, Page- 12 Wikimedia Commons, Indian Newlywed Couple Posing for Photo https://www.pexels.com, Tamil bride and groom performing Page- 13- kumaoni traditional wedding dress- Pooja Pandey wikimediacommons, Marathi traditional wedding dress- Smriti Patwardhan, Page- 14- wikimediacommons, Page 15- PM Narendra Modi, https://www.pmindia.gov.in, Page 20- indiahandmade Page 21- xuanzang-Wikimedia commons, भारत में चीनी यात्री, NCERT, wikimeadia commons, Page 24- https://www.worldhistory.org, Wikimedia commons, wikipedia.org/wiki/Didarganj_Yakshi, Page 25- Great Emperor Kanishka- Wikimedia commons, www.egyankosh.ac.in, Rashtrapati Bhavan Buddha-Wikimedia commons, Page 26-27 Ahilyabai holkar- Wikimedia commons, https://mrignayani.org https://www.mpinfo.org, https://indianculture.gov.in, kalakshetra.in,www.vastrashilpakosh.in, kancheepuram.nic.in, Kamaladevi Chattopadhyay- Wikimedia commons, Page 28-29 https://uptti.ac.in, texmin.nic.in, https://www.pexels.com, Wikimedia commons, Page 31- Wikimedia commons, Page 34- Mahatma Gandhi- Wikimedia commons., (स्रोत- कक्षा 12 के लिए हस्तकला की पाठ्यपुस्तक- 'भारतीय हस्तकला की परंपराएँ, भूत वर्तमान और भविष्य' से उद्धृत) Page 36-37- Wikimedia commons, Page 38-39- kumbh.gov.in, ddnews.gov.in,indianculture.gov.in, Page 42-43 handlooms.nic.in, ipindia.gov.in, texmin.nic.in, Page 44-45- Isro.gov.in, Page 46-47- puri.odisha.gov.in, Page 48-49- chandigarh.gov.in, chandigarhdistrict.nic.in, Page 50-51- Wikimedia commons, Page 56-57 Author's own images., Page 58-59- Mekhela sador, Wikipedia commons. Page- 60 Wikimedia commons, https://mrignayani.org/

Back Cover Credits:

From the Left– 1. Divyanshi Yadav, Class–XII, Central Public Sr. Sec. School, Udaipur, Rajasthan. 2. Aaditya Goel, Class–VIII, Dayawati Modi Academy, Meerut , Uttar Pradesh. 3. Aanchal Jadhav, Class–XI, National Public School, Indore, Madhya Pradesh

Previous Issue



The theme of the previous issue *of Sapnon ki Udaan* was 'My Colourful Summer Vacation'. The issue is available at:

https://ncert.nic.in/flipbook/Sapno_Ki_Udaan_E-magazine4/#page=1

Editorial Team

Anjali Chhabra, *Joint Secretary* (Academics), CBSE
Anshu Kumari, *Principal Chief Consultant*, Ministry of Education
Arunesh Kumar Dwivedi, *Senior Consultant*, DEAA, NCERT
Atul Kumar Gupta, *Editiorial Assistant* (Hindi), NCERT
Ashwini Sandip Patil, *Assistant Professor*, DEL, NCERT
Girish Kumar Tiwari, *Assistant Professor*, DEL, NCERT
Garima Syal, *Assistant Editor* (English), NCERT
Kanchan Wanchoo Sharma, *Deputy Director*, National Book Trust, India
KM Azmatunisa, *Editiorial Assistant* (Urdu), NCERT
Meenakshi, *Assistant Professor*, DEL, NCERT
Ritu Pallavi, *Assistant Commissioner* (Training), Kendriya Vidyalaya Sangathan
Sangeeta Jaiswal, *Assistant Commissioner* (Academic-3), Navodaya Vidyalaya Samiti
Shivani Aggarwal, *Proofreader*, NCERT
Sarita Chaudhary, *Assistant Professor*, DEPFE, NCERT
Yogesh Chandra Pandey, *Assistant Editor* (Hindi), DEAA, NCERT

Production Team

Head, Publication Division : M.V. Srinivasan
Chief Editor : Bijnan Sutar
Chief Business Manager : Amitabh Kumar
Chief Production Officer (In charge) : Deepak Jaiswal
Production Assistant : Nalla Aravind

Creative Team

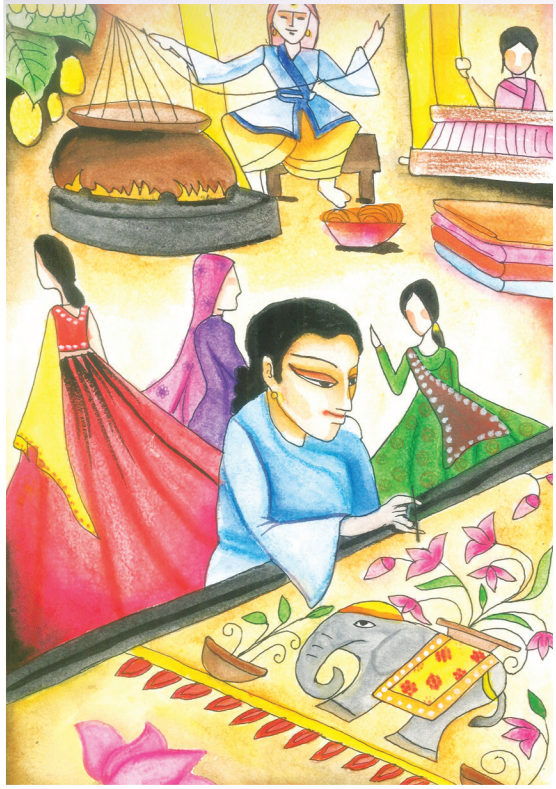
Prashant Upadhyay, DTP, NCERT
Designer: Blueink International Pvt. Ltd.

January 2026
PD XX BS

© National Council of Educational Research and Training, 2026

Printed on 80 GSM paper
Published at the Publication Division by the Secretary, National Council of Educational Research and Training, Sri Aurobindo Marg, New Delhi 110016





Disclaimer

- The contributors' views and opinions expressed in the magazine are their own. The editorial board is not responsible for any legal implications pertaining to copyright and other issues.
- Without prior permission from the publisher, no part of this e-magazine may be reproduced, stored, or transmitted in any form or by any means, whether electronic, mechanical, copying, recording, or otherwise.
- This document may be reviewed, summarised, reproduced, or translated in part or in whole with prior permission, however, it must not be used for sale or any commercial purpose.

सत्यमेव जयते
शिक्षा मंत्रालय
भारत सरकार
MINISTRY OF EDUCATION
Government of India

विद्यया ऽ मृतमश्नुते
एन सी ई आर टी
NCERT

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING